इस्लाम
और
तरबियते
औलाद
रज़वी किताब घर दिल्ली.6

लेखक

मौलाना बदरुल क़ादिरी फ़ाज़िले अशरफ़िया

बएहतेमाम

हाफ़िज़ मुहम्मद क़मरुद्दीन रज़वी

प्रकाशक

423, मटिया महल, जामा मस्जिद, दिल्ली . 6

Ph. 3264524

नाम किताब — इस्लाम और तर्बियते औलाद

लेखक — मौलाना बदरुल क़ादिरी

बएहतेमाम — हाफ़िज़ मुहम्मद क़मरुद्दीन रज़वी

प्रकाशक — रज़वी किताब घर, दिल्ली–6

कम्पोज़िंग — रज़वी कम्प्यूटर प्वाइंट, दिल्ली–6

प्रकाशन — 1999

सफ़हात — 48

क़ीमत

महाराष्ट्र में हमारा ऑफ़िस

114, ग़ैबी नगर भिवंडी, ज़िला थाना (महाराष्ट्र)
फोन: 55389
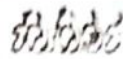
इस्लाम और तर्बियते औलाद

बच्चों की इस्लामी तर्बियत

मुआशरा में इस्लामी इंक़लाब बरपा करने के लिए सबसे पहला क़दम जो अफ़रादे मिल्लत के ज़िम्मे है वह यह कि गहरी नज़र से अन्दरूनी व बैरूनी आमाल का मुहासबा किया जाये और देखा जाये कि हम मुसलमान हैं तो हमारा अमल व किरदार कहां तक .क़ुरआनी "सिराते मुस्तक़ीम" पर है, और हम इससे कितने दूर हैं इस्लामी निज़ामे हयात पर कहां तक हमारी ज़िन्दगियां कारबन्द हैं और किन रास्तों से मुफ़सिद जरासीम ईमानी दौलत पर हमला कर रहे हैं।

यह सही है कि इलाज का निस्फ़ मरहला उस वक़्त तय होजाता है जब डाक्टर मर्ज़ की सही तश्ख़ीस में कामयाब हो जाते हैं – मगर सिर्फ़ उयूब पर आगाह होना ही उनसे नजात पाने के लिए काफ़ी नहीं। मुसलमान क़ौम का दीनी फ़रीज़ा है कि वह अंधेरों में हिदायत के चराग़ रौशन करे। और ग़लत रौ दुनिया को जो नफ़्स और शैतान की तक़लीद में भटकती जा रही है राहे नजात दिखाये। इसके लिए ज़रूरी है कि पहले "ख़ैरे–उम्मत" होने का खुद एहसास करे। अपनी ज़ात को और अपने बाल बच्चों को मुसलमान रखे। इस ज़िम्न में सबसे अहम मरहला बच्चों की इस्लामी तर्बियत और उनकी बुनियादी निगहदाश्त का है। जिसकी ज़िम्मेदारी सबसे ज़्यादा वालिदैन पर आयद होती है। यह वह नर्म नाज़ुक कोंपलें हैं जिन्हें अगर *इल्लल्लाह* की लोरियां दे कर पाला जाये तो वह वक़्त के ख़ालिद व तारिक़ बनकर उभर सकते हैं और इन्हीं बच्चों को अगर ख़राब माहौल के धारे पर आज़ाद छोड़ दिया जाये तो नंगे–क़ौम व मिल्लत, और वालिदैन के हक़ में फ़ितना बन सकते हैं।

क्या कोई यह पसन्द करेगा? कि उसकी औलाद चन्द मामूली मफ़ादात के पेशे नज़र दीन व दानिश से बेगाना हो जाये। हमारे यह नौनिहाल मरहूम डा॰ इक़बाल ने जिन्हें "शाहीं बच्चा" का लक़ब दिया है, कहीं वह अपने बाल व पर की हक़ीक़ी ताक़तों से बेगाना तो नहीं हो रहे हैं।

जवानों को मेरी आहे–सहर दे
फिर इन शाहीं बच्चों को बालो पर दे
ख़ुदावन्दा यह मेरी आरज़ू है
मेरा नूरे–बसीरत आम कर दे

इन्सानी ज़िन्दगी के तीन मराहिल

बचपन, जवानी और बुढ़ापा यह इंसानी ज़िन्दगी की तीन मन्ज़िलें हैं हर बूढ़ा कभी बच्चा था। आमतौर पर बचपन ही में लह्व व लअ़िब का रुजहान ग़ालिब रहता है, बच्चा ना–समझी की मंज़िल में जब तक रहा दुनिया की हर चीज़ के बारे में दिल व दिमाग़ में सवालिया निशान उभरता रहा। तबीअ़त ने खेल कूद से रग़बत रखी, जवान हुआ तो आराइश की तरफ़ माइल होगया। फैशन को पसन्द करने लगा। उम्र और पुख़्ता हुई तो दौलत व मर्तबत और औलाद के हुसूल की उमंगें उभरीं। जब बुढ़ापा आया तो बीते पन्नों की वर्क़ गरदानी और तारे गिनना मशग़ला बन गया।

माज़ी के झरोकों पर पड़ जाती हैं जब आंखें
कुछ बुझते चिराग़ों से उठता है धुंआं अब भी

जो लोग इस्लाम और ईमान से ख़ाली हैं और दुनिया की ज़िन्दगी ही को सब कुछ समझ बैठे हैं। वह रेत की दीवारें तामीर करने में अपनी उम्रे अ़ज़ीज़ को बर्बाद कर रहे हैं।

اِعْلَمُوْٓا اَنَّمَا الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا لَعِبٌ وَّلَهْوٌ وَّ زِيْنَةٌ وَّتَفَاخُرٌۢ بَيْنَكُمْ وَتَكَاثُرٌ فِي الْاَمْوَالِ وَالْاَوْلَادِ كَمَثَلِ غَيْثٍ اَعْجَبَ الْكُفَّارَ نَبَاتُهٗ ثُمَّ يَهِيْجُ فَتَرٰىهُ مُصْفَرًّا ثُمَّ يَكُوْنُ حُطَامًا ——

जान लो! कि दुनिया की ज़िन्दगी तो नहीं मगर खेल कूद, और आराइश, और तुम्हारा आपसमें बड़ाई मारना और माल व औलाद में एक दूसरे पर ज़्यादती चाहना उस मेंह की तरह है जिसका उगाया सबज़ा किसानों को भाया। फिर सूखा कि तु उसे ज़र्द देखे। फिर रौन्दन हो गया।

ज़ाहिरी हुस्न व ख़ूबी और ख़ुशनुमाई हयात यही हक़ीक़त रखते हैं। दुनिया की चमक–दमक सिर्फ़ पानी का बुलबुला है जो मुख़्तसर लमहे के लिए बड़ा जाज़िब नज़र आता है और फिर ख़त्म हो जाता है। दुनिया के पीछे ही ज़िन्दगी को दाव पर लगा कर दौड़ने वाले बड़ी चूक और ख़सारा में हैं।

दुनिया की ज़िन्दगी

यह ज़िन्दगी धोके के माल से ज़्यादा कोई हक़ीक़त नहीं रखती। दुनिया जिस तरह खुद नापायदार है उसी तरह इसके तमाम असबाब व लज़ायज़ भी फ़ानी और ग़ैर मुस्तक़िल हैं। उन्हें दवाम व इस्तक़लाल नहीं। जो इसमें आख़िरत के लिए अमल करे, और इस आ़लम में रह कर उस आ़लम का तलबगार हो, असबाबे दुनियवी से लगाव भी रखे तो ब–नीयते उख़रवी ही रखे तो उसके लिए दुनिया की कामयाबी भी आख़िरत का ही सौदा है।

हज़रत ज़ुन्नून मिस्री रहमतुल्लाह अलैह ने फ़रमाया–

"ऐ लोगो! दुनिया तलब करो, मगर उससे महब्बत न करो, सिर्फ़ तोशा यहां से लो। अस्ल आरामगाह कहीं और है।" माज़ी क़रीब के मशहूर आ़लिमे रब्बानी हाफ़िज़े मिल्लत मौलाना अब्दुलअज़ीज़ (बानी अल जामिअ़तुल अशरफ़िया मुबारकपुर–हिन्द) की ज़बान फ़ैज़े तर्जुमान से राक़िम ने कई बार यह अलफ़ाज़ सुने हैं–

"दुनिया अमल की खेती है। यहां आख़िरत के लिए काश्त करो।"

आप अक्सर अपने ख़ुतबात में दुनिया की बेसिबाती का तज़किरा करते हुए अ़रबी का यह मशहूर शेर पढ़ते थे–

انما الدنیا فناء لیس للدنیا ثبوت

انما الدنیا وما فیها كنسج العنكبوت

(दुनिया मिट जाने वाली है। दुनिया बाक़ी रहने वाली नहीं है। दुनिया और जो कुछ इसमें है मकड़ी के जाले की तरह नापायदार है।)

बचपन की देख–रेख

ज़िन्दगी के आख़िरी दोनों मरहलों की उस्तुवारी का रास्ता दर अस्ल पहले ही मरहला में ठीक हो जाता है। आज़ादी और लह्व व लअ़िब में मश. गूलियत, पढ़ाई लिखाई से आज़ादी व बेफ़िक्री, बुराईयों में इन्हेमाक और खुदा बेज़ार अ़वामिल की कारफ़रमाईयां बच्चों को बेदीनी के रास्ते पर ला डालती हैं। नाच–गानों और ख़राब माहौल का असर तबीअ़त में कजी, और फ़ितरत में शैतनत और नफ़सानियत को रासिख़ कर देती हैं जैसे गन्दे नाला में डुबकी लगाने के बाद पाकीए बदन का तसव्वुर नहीं किया जा सकता।

उसी तरह लामज़हब सोसाइटी में पल बढ़कर कोई सच्चा दीनदार कैसे बन सकता है?

वालिदैन की जानिब से सही तर्बियत और सबसे पहले घर के अंदरूनी माहौल की इस्लामी तरीक़े से सफ़ाई, वक़्त की पाबन्दी से फ़राइज़ व वाजिबात की खुद निगहदाश्त, और बच्चों की तर्ग़ीब, खेल ख़राबी पहुंचाने वाली बातों से पूरी तरह परहेज़, बुरी संगतों से बचाव का मा.क़ूल बन्दोबस्त, दीनी व इस्लामी तालीमात का इंतेज़ाम, यह हैं जिनसे बच्चों में इस्लामी सूझ बूझ पैदा करने की कोशिश होनी चाहिए। इसके बग़ैर किसी लादीनी माहौल में मुसलमान अपने दीन व दानिश की हिफ़ाज़त नहीं कर सकता, और अपने इस्लामी चहपान को बरक़रार नहीं रख सकता। बच्चों का दिल व दिमाग़ दर हक़ीक़त एक साफ़–शफ़्फ़ाफ़, बेदाग़ आईना होता है जिस पर माहौल और तर्बियत का असर मुरत्तब होता है। क़बूलियत की तम्सील में बच्चों के ज़ेहन को ذهن الصبی كنقش الحجر (बच्चा का ज़ेहन पत्थर की लकीर कहा गया है।)

लिहाज़ा इन पाकीज़ा आईनों को लामज़हबिय्यत के मुख़ालिफ़ असरात से महफ़ूज़ रखने की ज़रूरत है ताकि हर बच्चा अपनी इस्लामी फ़ितरत पर क़ाइम रह सके, दीन की ज़रूरतों से वाक़िफ़ हो सके और शरीअ़ते हक़्क़ा की मालूमात इतनी पक्की हो कि ग़लत अन्देशों को ब–आसानी रद्द कर सके।

या रब दिले मुस्लिम को वह ज़िन्दा तमन्ना दे
जो क़ल्ब को गर्मा दे जो रूह को तड़पा दे

कारे आईना साज़ी

इन शफ़्फ़ाफ़ आईनों में खुदा शनासी (चहपान) का रंग भरने के लिए और शैतानी धब्बों से महफ़ूज़ रखने के लिए ज़रूरी है कि बच्चों की तालीम व तर्बियत का उ़म्दा से उ़म्दा इंतेज़ाम किया जाये। इस्लामी उसूले तक़वा में ज़िन्दगी का सुराग़ तलाश करने वाले रौशन दिल उस्ताद अगर मयस्सर आसकें तो – उनकी सोहबत कीमियागर होती है। इनकी तालीम व तर्बियत से ज़िन्दा दिली नसीब होती है। इसी लिए आपने देखा होगा कि अल्लाह वाले और अहले बातिन ने ज़िन्दा दिल उलमा की सोहबत को बहुत

अहमियत दी है और दौरे क़दीम में इस्लामी दुनिया ने जितने लाल व जवाहिर पैदा किये उनकी तालीमी व तर्बियती ज़िम्मेदारियां, खुदातर्स, पाकीज़ा नफ़्स अहले इल्म से सर अंजाम पाईं। शायद आप इन सुतूर को पढ़कर फौरन यह कहना चाहते होंगे कि ऐसे उलमा और असातेज़ा अब कहां मयस्सर होंगे? यह बात दुरुस्त है, मगर हुसूले इल्मे दीन में इस बुनियादी नुक़्ता को फ़रामोश न किया जाये कि इल्मे दीन जहां तक हो सके दीनदार असातेज़ा से हासिल कराये जायें। हुसूले इल्म ही जज़्बए–इताअ़त देता है और खुदा व रसूल की इताअ़त व फ़रमांबरदारी के सिवा आतिशे जहन्नम से बचने की और रास्ता नहीं। लिहाज़ा लाज़िम है कि मुसलमान वह राह चलें, वह तरीक़े अपनायें जो नजात का ज़रिया हों।

इस सिलसिले में अव्वलीन बात जो क़ाबिले ग़ौर है वह यह कि रब तआ़ला ने मुसलमान माँ–बाप को भरपूर इख़्तियार के साथ अ़मल के मैदान में उतरने का हुक्म फ़रमाया है।

एक हदीस पाक में रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया–

كلكم راع وكلكم مسئول عن رعيته

तुम में का हर एक निगहबान है और सबसे उसके मातहतों के बारे में सवाल होगा।

यहीं से यह बात मुतअ़य्यन हो जाती है कि वालिदैन की शख़्सी ज़िम्मेदारियां औलाद का पालन पोषण और तालीम व तर्बियत के सिलसिले में क्या हैं? आज़ाद रवी, मज़हब से ला परवाही, दीन और दीनदारी से बेलगाव, अहकामे शरईया पर बे अमली, नहीं बल्कि खुल्लम–खुल्ला दीने इस्लाम के मुहर्रमात में आलूदगी और फ़राइज़ से ग़फ़लत, हमारी क़ौम को किस रुख़ ले जायेंगे? पोशीदा नहीं।

तीन अहम तर्बियतगाहें

फ़ाज़िलीने ज़माना जो तालीम व तर्बियत के मौज़ूअ़ पर तहक़ीक़ करते हैं वह इस नुक्ता से आशना हैं कि वालिदैन की आग़ोशे मुहब्बत औलाद की पहली दर्सगाह है। दूसरा मक़ाम, मदरसा या तालीमगाह है और मुअल्लिमीन। तीसरी चीज़ समाज और माहौल है। यह तीनों अ़नासिर एक बच्चे को बनाने या बिगाड़ने में बुनियादी किरदार अदा करते हैं।

हज़राते गिरामी! हम जिस दुनिया में बैठ कर अपने बच्चों की तालीम व तर्बियत के उनवान पर ग़ौर व फ़िक्र करते हैं तो यह ममालिक और बिलाद व अमसार ख़ालिस कुफ़्रिस्तान, बल्कि इफ़रीत–कदा हैं इबलीस का नंगा नाच घर–घर की ज़ीनत बन चुका है। माद्दी ज़राए और वसाइल की फ़रावानी के ग़लत इस्तेमाल ने ज़ेहन व दिमाग़ को सालिहियत के क़ाबिल ही नहीं रखा। एक बच्चा ग़ैर शुऊरी औक़ात ही से वह कुछ सुनता देखता और महसूस करता है जिसके होते हुए इस्लाम और ख़ुदा तरसी का बीज बोने के लिए मौक़ा ही नहीं फ़राहम हो पाता। आपको ख़ूब अच्छी तरह मालूम है कि एक उमदा बीज डाल–पात लाने, फूल और फल देने के लिए वैसी ही उमदा ज़मीन भी चाहता है। पौदों को बढ़ने और पनपने के लिए ज़मीन की नमी, हवा की ख़ुनकी, सूरज की गर्मी भी दरकार होती है। इन तमाम चीज़ों के मिलन से अमल शज्रकारी फलदायक होता है। बल्कि मामला इतना नाज़ुक है कि ज़रूरत से कम या ज़्यांदा गर्मी और सर्दी ख़ुशकी या नमी, एक उमदा बीज को निकम्मा व बेकार बना देती है।

ऐ अहले ईमान! ईमान व इस्लाम का मामला इन बीजों से कहीं ज़्यादा नाज़ुक है यह नंगापन अश्लीलता, यह बदकारी और हराम–कारी गर्म–बाज़ारी क्या ईमान की नाज़ुक कोपलों को प्रभावित नहीं करतीं? ज़रूर करती हैं।

रियाज़े दीं के यह महबूब गुन्चे
सुमूमे कुफ़्र से मुर्झा रहे हैं

समाजी ज़रूरतें तुम्हें इन ममालिक में लाई हैं मगर यह हलाकतख़ेज़ ग़फ़लत है कि तुम अपने नौनिहालों को कुफ़्रिस्तान के इस्लाम दुश्मन माहौल के सपुर्द करके बे–परवाह हो जाओ।

इन ममालिक से तुम अपना आज़ूक़ा हासिल करो, और सबसे अहम ज़रूरत इस बात की है कि औलाद की दीनी तालीम और तर्बियत पर ज़ोर दिया जाये। यहां का शहरी मुलकी और इलाक़ाई माहौल इस्लाम दुश्मन है। यहां की तालीमगाहें, इस्लाम व हक़्क़ानियत तो कुजा, शराफ़ते इन्सानी और मानवीय सभ्यता से उतर कर मज़ल्लत के गढों तके पहुंच रहीं हैं। आओ हालात और ज़माने के नब्बाज़ मरहूम डा॰ मुहम्मद इक़बाल की बात सुनो–

खुले हैं सब के लिए ग़रीबों के मैख़ाने
उलूमे ताज़ा की सरगर्मियां गुनाह नहीं
उसी सुरूर में पोशीदा मौत भी है तेरी
तेरे बदन में अगर सोज़े *लाइला–ह* नहीं

अहले मग़रिब की हैरत

बात याद आई कि ख़िलाफ़ते उस्मानिया के दौर में मिस्री छात्रों का एक गुरूप जरमनी में तालीम हासिल करने आया। उस दौर तक मुस्लिम हुकूमतों का यह आलम था कि हर गुरूप के साथ एक मज़हबी रहनुमा भी होता था जो विदेशों में इन शाहीं बच्चों के दीनी लगन की इस्लाह व तर्बियत करता रहे।

एक अख़बारी रिपोर्ट में देखा कि सुबह मुँह अंधेरे एक मिस्री तालिबे इल्म बर्फ़ जमी हुई ज़मीन पर वज़ू के लिए पानी तलाश कर रहा है। वाज़ेह रहे कि उस ज़माने तक तमद्दुन इतना तरक़्क़ी पज़ीर नहीं था। पानी और दूसरी ज़रूरी चीज़ों की इतनी आसानी नहीं थी। रिपोर्टर ने देखा कि तालिबे इल्म बर्फ़ तोड़–तोड़ कर पानी बना रहा है और उससे मुँह हाथ धो रहा है और बेचैनी और इज़्तेराब में जल्दी बाज़ी कर रहा है उसने पूछा आख़िर तुम यह क्या कर रहे हो? तो उसने जवाब दिया कि नमाज़े फ़ज्र का वक़्त जा रहा है और तुम पूछते हो कि मैं क्या कर रहा हूं। मैं नमाज़ के लिए वज़ू कर रहा हूं। तर्जुमान ने कहा इस क़ौम की ईमानी हिद्दत (गर्मी) को कौन माँद (ख़त्म) कर सकता है जिसे बर्फ़ पिघला कर वज़ू करने में ही मज़ा आता है।

ऐ बा–हिम्मत मुसलमान!

निगाह वोह नहीं जो सुर्ख़ ज़मुर्रद पहचाने
निगाह वह है जो मोहताजे मेहरो माह नहीं
फ़िरंग से बहुत आगे है मंज़िले मोमिन
क़दम उठा यह मक़ाम इन्तेहा–ए–राह नहीं

माद्दियत–ज़दह (दुनियादार) कुछ इंसानों का यह ख़्याल है कि दुनिया की दौलत ही सब कुछ है और लोग उसके हुसूल में इज़्ज़त व नामूस तक को दाँव पर लगा देते हैं।

दोस्तो! यह निहायत नुक़्सान–देह तिजारत है। जिससे ज़्यादा

अफ़सोस–नाक अमल कौनसा होगा? सोचो तो सही। वह कौम जिसने अपने उरूज व इर्तिक़ा (विकास) के दौर में अक़वामे आलम (विश्व–राष्ट्र) की इमामत का फ़रीज़ा अंजाम दिया है। जिसके पास हिदायाते इलाहिया का ख़ज़ीना मौजूद है। आलमी मसाइल से लेकर शख़्सी ज़िन्दगी के तमाम परेशानियों का हल जिसके सन्दूक़ में बन्द है। वह दुनियाए फ़ानी की मामूली चमक से इस क़दर मुतअस्सिर हो सकती है?– नहीं और हरगिज़ नहीं– ऐ फ़रज़न्दाने ख़ालिद व तारिक़ झटक दो इन गुबारों को और कह उठो।

ग़फ़लत आई थी मगर आज तो बेदार हैं हम
दीने हक़ तेरे लिए जान से तैयार हैं हम

डा॰ इक़बाल की सरगुज़श्त को हम मुनाजात बनायें तो यूं कह सकते हैं –

ख़ीरा न कर सके हमें जल्व–ए–ताबिश फ़िरंग
सुर्मा हो अपनी आंख का ख़ाके मदीना व नजफ़

पैदाइश से क़ब्ल औलाद के हुक़ूक़

औलाद के वजूद में आने से पहले भी कई ज़िम्मेदारियां हैं जिनकी निगहदाश्त से औलाद की सालिहियत वाबस्ता होती है। इस्लाम में रिश्ता क़ाइम करने और निकाह के लिए जोड़ा तलाश करते वक़्त इसी लिए ख़ुदा–तर्स नेक और मुत्तक़ी बीवी के इन्तेख़ाब पर ज़ोर दिया गया है –– क्योंकि नजीब ख़ानदान की परहेज़गार ख़ातून और शरीफ़ घराने के नेक सीरत मर्द के ही ज़रीये नेक औलाद पैदा होने की उम्मीद है।

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया "औरत से चार चीज़ों की बुनियाद पर शादी की जाती है उसके माल की बुनियाद पर, ख़ानदानी शराफ़त की बुनियाद पर, उसकी ख़ूबसूरती की बुनियाद पर और उसके दीन की बुनियाद पर" فَاظْفَرْ بِذَاتِ الدِّيْنِ تَرِبَتْ يَدَاكَ तो तुम दीनदार औरत को हासिल करो, तुम्हारा भला हो। एक बार इरशादे गिरामी हुआ –

"औरतों से उनके हुस्न व जमाल की वजह से शादी न करो। हो सकता है उनका हुस्न उनको तबाह कर दे, और न उनके माल की वजह से शादी करो– मुमकिन है माल उनको सरकशी में मुब्तला कर दे बल्कि शादी दीन

की बुनियाद पर करो काले रंग की दीनदार बांदी अफ़ज़ल है।"

ज़ुफ़ाफ़ और हमबिस्तरी

निकाह करने के बाद जब बीवी को अपने घर लाये और उससे मुबाशरत का इरादा करे, शरीअत ने उसके लिए भी तरीक़े बताये हैं — सुहाग रात यानी शादी की पहली रात जब मियां बीवी एक साथ हों तो शौहर को चाहिए कि बीवी के माथे पर हाथ रख कर यह दुआ पढ़े।

اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اَسْئَلُكَ مِنْ خَيْرِهَا مَا جَعَلْتَهَا عَلَيْهِ وَاَعُوْذُبِكَ مِنْ شَرِّهَا وَشَرِّ مَا جَعَلْتَهَا عَلَيْهِ

ऐ अल्लाह! मैं तुझसे इसकी भलाई चाहता हूं और ख़ासतौर पर तूने जो भलाई इसकी फ़ितरत में रखी है, और इसके शर (बुराई) से पनाह मांगता हूं उस शर से जो इसकी फ़ितरत में है।

मुबाशरत के वक़्त बिस्मिल्लाह शरीफ़ पढ़ लेने से शैतान के शर से हिफ़ाज़त रहती है। बुख़ारी व मुस्लिम में मुबाशरत के वक़्त पढ़ने की यह दुआ आई है।

بِسْمِ اللّٰهِ اَللّٰهُمَّ جَنِّبْنَا الشَّيْطَانَ وَجَنِّبِ الشَّيْطَانَ مَا رَزَقْتَنَا

अल्लाह के नाम से, ऐ अल्लाह तू हम दोनों को शैतान से महफ़ूज़ रख और दूर रख और जो औलाद तू दे उसे भी शैतान से महफ़ूज़ रख।

हमबिस्तरी के इस्लामी आदाब में से यह भी है कि चादर या कपड़े का पर्दा पड़ा रहे। इसलिए कि इरशादे रसूले अकरम है।

"जब कोई शख़्स अपनी ख़्वाहिश पूरी करने के लिए बीवी के पास जाये तो उसे लिबास और कपड़ों से यूं आज़ाद नहीं होना चाहिए जैसे बकरे और बकरियां होते हैं।"

आम हैवानों से इंसान को सूझ बूझ और हया व शर्म के सबब मुमताज़ किया गया है — अक़्ल व हया और शराफ़त का तक़ाज़ा है कि जानवरों की तरह जहाँ तहाँ बेधड़क होने के बजाये — मज़कूरा आदाब का ख़्याल रखे—रब तआला के कुछ फ़रिश्ते हैं जो हर वक़्त इंसान के साथ–साथ होते हैं सिर्फ़ बैतुल ख़ुला (पाख़ाना) में दाख़िल होते वक़्त — और हमबस्तिरी के वक़्त वह फ़रिश्ते इंसान से जुदा हो जाते हैं — आक़ा व मौला सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उनसे हया करने और उनका

एहतेराम करने का हुक्म फ़रमाया है।

فَاسْتَحْيُوْا هُمْ وَاَكْرِمُوْاهُمْ उनसे शर्माया करो और उनका लिहाज़ रखा करो

इस क़िस्म के जज़्बाती कामों के लिए इस्लामी हिदायात की महमीज़ हमें शैतानी पंजों से बचा कर रहमानी तरीक़ए ज़िन्दगी पर लगाने के लिए हैं। ताकि हमारी नस्लें ख़ुदाई हिफ़ाज़त में पलें और बढ़ें। हमबिस्तरी के वक़्त एक दूसरे की शर्मगाह देखना और ज़्यादा बातें करना भी मकरूह है। पहली बात से बीनाई कमज़ोर होने और दूसरी बात से औलाद के तुतले होने का अंदेशा है।

सबसे पहले सुने ख़ुदा का नाम

नवमौलूद (नया बच्चा) के कान में पहली आवाज़ तकबीर की जानी चाहिए ताकि बच्चे की रूह तौहीद से आश्ना रहे और उम्र भर वह ख़ुदावन्दे क़ुद्दूस की किब्रियाई के गीत गाता रहे।

तिर्मिज़ी और अबू–दाऊद में हज़रत अबू–राफ़ेअ़ सहाबीए रसूल से रिवायत है–

رأيتُ رسولَ اللهِ صلى الله عليه وسلم اذن فى اذن الحسن بن على حين ولدته فاطمة بالصلوٰة

मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को देखा वह (अपने नवासे) हसन बिन अली के कान में नमाज़ की अज़ान पढ़ते हुए जब (हुज़ूर की शहज़ादी) हज़रत फ़ातिमा के यहां उनकी विलादत (पैदाइश) हुई।

हुज़ूर सरवरे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के आज़ाद–कर्दा ग़ुलाम हज़रत अबू–राफ़ेअ़ की इस रिवायत से हुज़ूर का सिर्फ़ अज़ान देना साबित है। मगर कन्ज़ुलउम्माल में हज़रत हुसैन बिन अली रज़ियल्लाहु अन्हुमा की रिवायत से मालूम होता है कि आक़ा व मौला सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से नवमौलूद के दाहिने कान में अज़ान और बायें कान में इक़ामत पढ़ी।

इस नई दुनिया में आने वाला बच्चा कुछ न कुछ सुनेगा— कुछ न कुछ खायेगा–देखेगा–बोलेगा–और फिर किसी न किसी राह पर चलेगा—हर इंसान ख़ारिजी असरात को क़बूल करने के बाद ही अच्छा या बुरा बनता है। तालीमी और तर्बियती कोर्स का पहला और निहायत अहम सबक़—जो

पैदाइश के बाद वालिदैन के ज़िम्मे है वह बच्चों के कानों को अल्लाह तआला के नामे पाक से आश्ना कराना है —– इस तरह एक मुसलमान के लिए इस्लाम की बुनियादी तालीम की शुरूआत भी हो जाती है – इस अज़ान व इक़ामत के ज़रीए बच्चे की रूह जिस पर अभी दुनिया की मैल कुचैल का कोई असर नहीं है अनवारे तौहीद से मुनव्वर होती है – शैतानी असरात से बच्चा महफ़ूज़ भी रहता है।

और इस्लामी फ़लसफ़ए ज़िन्दगी को इस अ़मल के ज़रीए कितना आसान बना कर समझा दिया गया है कि आमद के वक़्त अज़ान होती है और दमे वापसी नामज़े जनाज़ा– मोमिन और मुसलमाने कामिल की ज़िन्दगी अज़ान व नमाज़ के दर्मियान वक़्फ़े की तरह है जो यादे ख़ुदा में गुज़र जाये। शायर कहता है—–

आते हुए अज़ां हुई जाते हुए नमाज़
कितने क़लील वक़्त में आये चले गए

मुंह में तबर्रुक

दौरे रहमत सरापा बरकत में जबकि दुनिया की पुश्त को क़दमे रसूले अकरम की सआ़दत हासिल थी। स[illegible]बाए किराम रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हुम का तरीक़ा था कि उनके घर जब कोई बच्चा पैदा होता तो वह उसे ख़िदमते अक़दस में लाते, हुज़ूर रहमते दो आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम खजूर अपने दहने मुबारक में चबा कर बच्चे के मुँह में डाल देते जिसे तहनीक कहते हैं। इस तरह लुआबे दहने मुबारक (पाक थूक) की बरकतें बच्चे को हासिल हो जातीं और सरकार की रहमत बार दुआओं से मालामाल हो कर जाते।

हज़रत आइशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अन्हा से रिवायत हैः फ़रमाती हैं!

كَانَ يُؤْتَى بِالصِّبْيَانِ فَيُبَرِّكُ عَلَيْهِمْ وَيُحَنِّكُهُمْ

बच्चे आपके पास लाये जाते थे तो हुज़ूर उनके लिए दुआए बरकत करते और तहनीक फ़रमाते थे।

बुख़ारी मुस्लिम की रिवायत है कि —– हज़रत अस्मा बिन्ते अबी बकर रज़ियल्लाहु अन्हुमा हिजरत से पहले मक्का में हामिला थीं। जब हिजरत करके मदीना आयीं तो क़ुबा में अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर की विलादत हुई (हज़रत अस्मा कहती हैं) मैं बच्चे को लेकर हुज़ूरे अक़दस सल्लल्लाहु

अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुई और मैंने उसे आपकी गोद में रख दिया। आपने छोहारा मंगवाया और उसे चबा कर फिर अपना लुआबे दहन बच्चे के मुँह में डाला और तालू में मल दिया। फिर उसके लिए दुआ की और बरकत से नवाज़ा। यह इस्लाम में पहला बच्चा था। (जो बाद हिजरत के एक मुहाजिर के घर में पैदा हुआ)।

हदीस शरीफ़ की किताबों में तहनीक के कई वाक़िआत आये हैं इसी लिए मुसलमानों में यह तरीक़ा हो गया कि अपने बच्चों को नेक और सालेह मुसलमानों के पास लेजाते हैं और उनसे तलबे दुआ के साथ–साथ तहनीक भी कराते हैं जिसके बरकात व हसनात भी देखे जाते हैं – चुनांचे

इमाम अहमद रज़ा क़ादिरी अलैहिर्रहमा के घर आपके छोटे शाहबज़ादे मुस्तफ़ा रज़ा ख़ां (मुफ़्ती–ए–आज़म हिन्द अलैहिर्रहमा) की विलादत हुई तो उस वक़्त इमाम अहमद रज़ा ख़ां क़ादिरी अपने मुर्शिद ख़ाना में मौजूद थे। हज़रत नूरी मियां अलैहिर्रहमा ने आपको फ़रज़न्द तवल्लुद होने की खुशख़बरी दी और फ़रमाया कि आप बरेली जायें– कुछ रोज़ बाद हज़रत नूरी मियां जब बरेली तशरीफ़ लाये तो मुस्तफ़ा रज़ा को आग़ोशे नूरी में डाल दिया गया। आपने उनके हक़ में दुआ फ़रमाई। तहनीक किया, और अंगुश्ते मुबारक मुस्तफ़ा रज़ा के मुँह में रख कर, क़ादिरी व बरकाती बरकात से मालामाल कर दिया–– फ़रमाया कि यह बच्चा अपने ज़माना का वली होगा। यह सुन्नते रसूले अकरम का फ़ैज़ान और क़ादिरी कमालात का मुँह बोलता सुबूत है कि हज़रत नूरी मियां की आग़ोश में चन्द लमहे इक्तेसाबे नूर करके मुस्तफ़ा रज़ा ख़ां हमेशा के लिए ख़ुद भी नूरी बन गए।

हर मुसलमान नवमौलूद के लिए माँ–बाप को चाहिए कि मुताबिक़ सुन्नत किसी नेक, सालेह मुत्तक़ी और परहेज़गार बन्दए ख़ुदा से बच्चा के लिए तहनीक और दुआ करायें।

अक़ीक़ा

औलाद की पैदाइश माँ–बाप और ख़ानदान के लिए मसर्रत व शादमानी का पैग़ाम लाती है बारगाहे ख़ुदावन्दी में इस नेअ़मत की शुक्र–गुज़ारी का इस्लामी तरीक़ा यह है कि उसका अक़ीक़ा किया जाये। अक़ीक़ा सुन्नते इब्राहीमी है। अहले किताब यहूद और अरब के लोग भी इस्लाम से पहले अक़ीक़ा करते थे।

जामेअ़ तिर्मिज़ी व सुनन नेसाई में उम्मे कुर्ज़ रज़ियल्लाहु अन्हा से रिवायत है वह कहती हैं–

"मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से सुना आप अक़ीक़ा के बारे में फ़रमा रहे थे कि लड़के की तरफ़ से दो बकरियां की जायें और लड़की की तरफ़ से एक बकरी और इसमें कोई हर्ज नहीं है कि अक़ीक़ा के जानवर नर हैं कि मादा।"

इसी तरह अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन आ़स से रिवायत है–

"रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया जिसके बच्चा पैदा हो और वह उसके लिए अक़ीक़ा की क़ुरबानी करना चाहे तो लड़के की तरफ़ से दो बकरियां– और लड़की की तरफ़ से एक बकरी की क़ुरबानी करे।"

अक़ीक़ा फ़र्ज़ या वाजिब नहीं बल्कि मुस्तहब अमर है। ख़ुदाए तआ़ला ने जिसको वुसअ़त दी है उसे पैदाइश के सातवें दिन बच्चे के बाल मुंडवाकर बाल के वज़न बराबर चाँदी या सोना (जिसकी वुसअ़त हो) ख़ैरात कर देना चाहिए और सातवें ही रोज़ अक़ीक़ा कर देना चाहिए। अगर उसके बाद भी करे फिर भी कोई हर्ज नहीं। बुख़ारी शरीफ़ में हज़रत सलमान बिन आमिरुज़्ज़ब्बी की रिवायत है वह फ़रमाते हैं–

"मैंने रसूलुल्लाहु सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम को यह फ़रमाते सुना कि बच्चे के साथ अक़ीक़ा है (यानी ख़ुदावन्दे क़ुद्दूस ने जिसे बच्चा अता फ़रमाया उसे अक़ीक़ा करना चाहिए) लिहाज़ा बच्चे की तरफ़ से अक़ीक़ा की क़ुरबानी करो और उसका सर साफ़ करा दो।"

ग़ौर कीजिए कि हज के अरकान में भी क़ुरबानी और सर मुंडाना शामिल है जो यादगारे ख़लीलुल्लाह और सुन्नते इब्राहीमी की तकमील है। मुसलमान के घर जो औलाद पैदा होती है अक़ीक़ा और तहलीक़ से गुज़ार कर हम यह साबित करते हैं कि हम सबका और इस नवमौलूद का तअ़ल्लुक़ ख़ुदा के ख़लील सय्यदना इब्राहीम अलैहिस्सलाम की मिल्लत से है जो तौहीद के अज़ीम अलमबरदार और रसूले ख़ातिम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के जद्दे अमजद हैं।

तिर्मिज़ी की रिवायत में है –

हज़रत अली बिन अबी तालिब रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत हैकि

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने हसन के अक़ीक़ा में एक बकरी ज़बह की और (अपनी साहबज़ादी) फ़ातिमा से फ़रमाया—

احلقی رأسه وتصدّقی بزنة شعره فضة فوزناه فكان وزنه درهما أو بعض درهم

उसका सर साफ़ कर दो और बालों के वज़न बराबर चाँदी सदक़ा करदो, जब हमने वज़न किया तो एक दिरहम भर या उससे भी कम थे।

हज़रत सय्यदना हसन और सय्यदना हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हुमा की पैदाइश पर हुज़ूरे अक़दस सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का एक—एक मेंढे की क़ुरबानी करना अहादीस में आया है। कुछ रिवायात से दो—दो मेंढों की क़ुरबानी का भी पता चलता है। मगर मुहद्दिसीन किराम ने अबूदाऊद की एक मेंढे वाली रिवायत को तरजीह दी है — इस से यह मालूम हुआ कि अगर एक की तौफ़ीक़ हो तो एक से भी अक़ीक़ा किया जा सकता है।

अच्छा इस्लामी नाम रखना

वालिदैन पर औलाद की ज़िम्मेदारियों में से यह भी एक ज़िम्मेदारी है कि उनका अच्छा इस्लामी नाम रखें। माँ—बाप अपनी औलाद को जो कुछ तोहफ़ा ज़िन्दगी में देते हैं उनमें बच्चों का नाम सबसे पहला और बुनियादी तोहफ़ा है जिसे वह उम्र भर उठाये रखते हैं, यहां तक कि उसी नाम से क़ियामत के मैदान में कायेनात के ख़ालिक़ व मालिक के दरबार में उनकी पुकार होगी। मुसनद अहमद और सुनन अबूदाऊद में है।

हज़रत अबू दर्दह रज़ियल्लाहु अन्हु रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया—

تُدعون يوم القيامة بأسمائكم وأسماء آبائكم فأحسنوا أسمائكم

क़ियामत के दिन तुम अपने और अपने आबा के नामों के साथ पुकारे जाओगे। लिहाज़ा अपने अच्छे नाम रखा करो।

दुनिया में मुसलमान के घर पैदा होने वाले हर बच्चे का यह हक़ है कि उसको उमदा से उमदा इस्लामी नाम दिया जाये। इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया।

حقُّ الولدِ على الوالدِ أن يُحسِنَ اسمَه ويُحسِنَ أدبَه

बाप पर बच्चे का यह हक़ है कि उस का अच्छा नाम रखे और हुस्ने अदब (अच्छा तौर तरीक़ा) से आरास्ता करे।

सही मुस्लिम शरीफ़ में अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है रसूले खुदा सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया।

तुम्हारे नामों में अल्लाह को सबसे ज़्यादा पसन्दीदा नाम अब्दुल्लाह और अब्दुर्रहमान हैं इसी तरह नामे पाक "मुहम्मद" (सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम) की भी हदीस में बहुत फज़ीलत आई है और फ़रमाया गया है कि क्या हर्ज है कि तुम्हारे घरों में एक दो या उससे ज़्यादा का नाम मुहम्मद हो–रसूले खुदा सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ने पहले के अम्बिया के मुबारक नामों पर बच्चों के नाम रखने की भी तर्ग़ीब दी है और हुज़ूर ने अपने एक साहबज़ादे का नाम भी "इब्राहीम" रखा – इसके इलावा बामाना और उमदा नामों को भी हमारी शरीअ़त में पसन्द किया गया है। सरवरे कौनैन सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इसी लिए अपने नवासों के नाम हसन और हुसैन रखे।

अम्बियाए किराम और बुज़ुर्गाने दीन सालिहीन और अहले तक़वा के पाक नामों के रखने में एक फ़ाइदा यह भी है कि उन नेक नफ़्स हस्तियों से इच्चे की ज़िन्दगी पर अच्छे असरात मुरत्तब होने की उम्मीद है। मसलन मुहम्मद अहमद, हामिद महमूद, अब्दुल्लाह व अब्दुर्रहमान, अब्दुलक़ादिर व मुहियुद्दीन, मुईनुद्दीन व बहाउद्दीन, शहाबुद्दीन व अलाउद्दीन वग़ैरहुम नाम अपने अन्दर खुद ही बहुत असर रखते हैं।

इसके बजाय जो लोग मज़हब–बेज़ार माँहौल से मुतअस्सिर होकर अपने या अपने बच्चों के नाम कुफ़्फ़ार व मुशरिकीन के नामों पर रखते हैं और इस्लामी नामों को कोई अहमियत नहीं देते हैं– वह ग़ौर करें तो महसूस होगा कि बच्चे पर इन नामों का बहुत बुरा असर होता है–और नाम की कशिश उन्हें कहां से कहां क़अ़रे मज़ल्लत (इन्तेहाई ज़िल्लत) की तरफ़ खींच ले जाती है और इससे बद तरीन बात और क्या होगी–कि मुसलमान की औलाद को कल मैदाने क़ियामत में कुफ़्फ़ार के नामो से पुकारा जायेगा –और जो माँ बाप औलाद को इस्लामी नाम न दे सके उनसे इस्लामी काम की तालीम व तर्बियत की क्या उम्मीद रखी जा सकती है?

लिहाज़ा मुसलमानों को इस पर ध्यान देना चाहिए और अपनी ज़िम्मेदारी समझनी चाहिए कि औलाद को अच्छे इस्लामी नाम दें।

पहला बोल

मुसलमानों के घर जो बच्चा पैदा हो और ज़रा होशियार होकर ज़बान खोलने लगे तो सबसे पहले उसको दुनिया के ख़ालिक़ व मालिक का प्यारा नाम *"अल्लाह"* सिखाना चाहिए --- और इस बात की मश्क़ करानी चाहिए कि उसकी पाक साफ़ ज़बान जो अभी दुनिया में किसी बात से मस नहीं हुई है उस पर सबसे पहली बात जो जारी हो वह कलिमा तय्यबा हो --- सोचो तो सही पाक साफ़ ज़बान पर जब सबसे पहले तय्यब कलिमा जारी होगा --- तो उस ज़बान से रब तआला के मुक़द्दस नाम की बरकत का यह असर होगा कि उम्र भर ख़ैरात व हसनात के ---- गुल-बूटे बिखरेंगे ---- जिस ज़बान की पहली बात अल्लाह तआला की बात होगी। उसकी आख़िरी बात भी *इन्शाअल्लाहुल-क़वीयुल-करीम* अल्लाह ही की बात होगी। जो ख़ातिमा बिलख़ैर की दलील है।

इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया "अपने बच्चों की ज़बान से सबसे पहले *लाइला-ह इल्लल्लाहु* कहलवाओ --- और मौत के वक़्त उनको इसी कलिमा की तलक़ीन करो।"

ज़बाँ खुले तो कहो *लाइला-ह इल्लल्लाह*
इसी पे ख़ातमा बिलख़ैर हो बे औनिल्लाह

जिस ज़िन्दगी की इब्तेदा नाम पाक *"अल्लाह"* से करोगे। ख़ुदा के फ़ज़्ल व करम से उसका ख़ातिमा भी इसी इस्मे ज़ात के सदक़े ईमान बिल्लाह पर होगा-मौलाए अज़्ज़ व जल्ल तौफ़ीक़ से नवाज़े - आमीन0

सदक़ए जारिया

इन्सान दुनिया से गुज़र जाता है मगर उसने अपनी ज़िन्दगी में अगर कुछ ऐसे नेक काम कर दिये हैं जिनसे ख़ल्क़े ख़ुदा को नफ़ा होता रहता है और लोग दीनी व दुनियवी फ़ाइदे हासिल करते रहते हैं --- तो मरने के बाद भी उस इंसान को सवाब पहुंचता रहता है जैसे पानी का इन्तेज़ाम कर देना -रास्ते बनवा देना-मस्जिदें-सराए-मुसाफ़िरख़ाने-मदरसे और ख़ानक़ाहें तामीर करा देना। किताबें लिख कर छोड़ देना या ख़रीद कर वक़्फ़ कर देना वग़ैरह। इन सदक़ात में एक सदक़ए जारिया नेक औलाद भी है। जिसकी

नेक दुआओं से माँ बाप को सवाब पहुंचता रहता है।

इरशादे रसूले अकरम है ––

"जब इंसान मर जाता है तो उसका अ़मल ख़त्म होजाता है मगर तीन क़िस्म के आमाल ऐसे हैं कि उनका सवाब मरने के बाद भी मिलता रहता है।"

صَدَقَةٌ جَارِيَةٌ اَوْ عِلْمٌ يُنْتَفَعُ بِهٖ اَوْ وَلَدٌ صَالِحٌ يَدْعُوْ لَهٗ

सदक़ए जारिया, या ऐसा इल्म छोड़ जाये जिससे लोग फ़ाइदा उठायें या नेक औलाद जो उसके लिए दुआ करे।

सालेह और नेक औलाद दुनिया में भी सआ़दतमन्द रहती है और माँ–बाप का अदब व एहतेराम क़ाइम रख कर उनकी ख़िदमत–गुज़ारी करती है और वालिदैन के मर जाने के बाद उनके लिए ज़ख़ीर–ए–आख़िरत भी फ़राहम करती है। इस लिए औलाद को सालेह और नेक –– परहेज़गार बनाने पर सबसे ज़्यादा ध्यान देना चाहिए।

लड़कियों के साथ अच्छा बर्ताव

औलाद ख़्वाह लड़का हो या लड़की माँ–बाप के प्यार मुहब्बत और हमदर्दी व मामता के दोनों हक़दार हैं––– कुछ लोगों में लड़कियों के लिए वह शफ़क़त और प्यार नहीं पाया जाता, जो चाहत लड़कों के लिए होती है। जाहिली दौर में जब दुनिया इस्लाम की रौशनी से मुनव्वर नहीं हुई थी यह हाल था कि लड़कियों का बाप बनना लोग अपने लिए नंग व आ़र (शर्म की बात) ख़्याल करते थे और उन्हें पैदा होते ही दफ़न कर देना बहादुरी तसव्वुर करते थे। क़ुरआन मजीद सूरह नहल में रब्बे कायेनात ने इन दुख़्तर बेज़ारों (बेटियों से दुखी) की कैफ़ियात बयान फ़रमाई है। पहले तर्जुमा फिर आयत मुलाहिज़ा कीजिए

(तर्जुमा) "इनमें से किसी को लड़की पैदा होने की ख़बर सुनाई जाती है तो वह दिल मसोस कर रह जाता है लोगों से छुपता फिरता है मुँह नहीं दिखाना चाहता उस बुराई की वजह से जिसकी उसे ख़बर मिली है। सोचता है क्या उस लड़की को ज़िल्लत के साथ बाक़ी रखे या कहीं लेजाकर मिट्टी में दबा दे।"

وَاِذَا بُشِّرَ اَحَدُهُمْ بِالْاُنْثٰى ظَلَّ وَجْهُهٗ مُسْوَدًّا وَّهُوَ كَظِيْمٌ ۚ يَتَوَارٰى مِنَ الْقَوْمِ مِنْ سُوْٓءِ مَا بُشِّرَ بِهٖ ؕ اَيُمْسِكُهٗ عَلٰى هُوْنٍ اَمْ يَدُسُّهٗ فِى التُّرَابِ (النحل)

दुनियावी उमूर में लड़कियों से ख़ानदान और माँ–बाप को कोई नफ़ा

हासिल होता देखाई नहीं देता इस लिए बहुत लोगा आज भी उनकी पैदाइश पर नाक भंव सिकोड़ते हैं। इस्लाम ने लड़कियों की पैदाइश और उनकी परवरिश को अहले ईमान के लिए सामाने इम्तेहान और वजहे आज़माइश क़रार दिया है और उनकी इस्लामी परवरिश व परदाख़्त (परवरिश यानी पालन–पोषण) पर अज़्रे अ़ज़ीम की बशारत दी है।

अबूदाऊद इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा से रावी रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया "जिसके यहां बच्ची पैदा हुई और उसने जाहिलीयत के तरीक़े पर उसे ज़िन्दा दफ़न नहीं किया और न उसे हक़ीर जाना — और न लड़कों को उसके मुक़ाबले में तरजीह दी तो अल्लाह ऐसे लोगों को जन्नत में दाख़िल करेगा।"

बुख़ारी व मुस्लिम में हज़रत उम्मुल–मोमिनीन आइशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अन्हा की यह रिवायत आई है — वह फ़रमाती हैं।

"मेरे पास एक औरत आई जिसके पास दो बच्चियां थीं। वह कुछ मांगने आई थी, मेरे पास सिवाये एक खजूर के कुछ न था। वह मैंने उसे देदी उसने उस खजूर को उन दोनों लड़कियों में बांट कर दिया और ख़ुद कुछ नहीं खाया फिर वह उठी और चली गई। उसके बाद जब नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तशरीफ़ लाये तो मैंने आपसे उस औरत का हाल बयान किया (कि ख़ुद भी भूकी थी मगर उसने बच्चियों को ख़ुद पर तरजीह दी) हुज़ूर ने इरशाद फ़रमाया–

مَنِ ابْتُلِىَ مِنْ هٰذِهِ الْبَنَاتِ بِشَيْئٍ فَاَحْسَنَ اِلَيْهِنَّ كُنَّ لَهٗ سِتْرًا مِّنَ النَّارِ

जिसे इन बच्चियों के ज़रिये आज़माइश में डाला गया फिर उसने उन बच्चियों के साथ अच्छा सुलूक किया तो यह बच्चियां उसके लिए जहन्नम से परदा बन जायेंगी।

सुनन अबीदाऊद और जामेअ़ तिर्मिज़ी में अबूसईद ख़ुदरी रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया।

जिसने तीन बेटियों या तीन बहनों या दो बेटियों और बहनों का बोझ उठाया। उनकी अच्छी तर्बियत की और उनके साथ अच्छा सुलूक किया। और फिर उनका निकाह कर दिया तो अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से उस बन्दे के लिए जन्नत का फ़ैसला है।"

औलाद के साथ मुसावियाना बर्ताव

माँ–बाप को चाहिए कि अगर एक से ज़्यादा बच्चे हों और उनको कोई चीज़ देने लगे तो प्यार मुहब्बत और शफ़क़त में हर एक से बराबरी का तरीक़ा अपनायें। ऐसा न हो कि किसी को ज़्यादा चाहें। उसे कुछ दें और दूसरों को नज़र अन्दाज़ करें। ऐसा करने से बच्चों के नाज़ुक ज़ेहन पर नफ़रत के धब्बे पड़ जाते हैं जो उनके अख़लाक़ की तामीर के लिए सख़्त नुक़सान पहुंचाने वाले हैं। मुअ़ल्लिमे अख़लाक़ व इंसानियत सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ने इस बाब में हर एक औलाद से मुसावियाना बर्ताव की तालीम दी है।

नोअ़मान बिन बशीर से बुख़ारी व मुस्लिम में रिवायत है। उन्होंने कहा कि मेरे वालिद मुझे लेकर हुज़ूरे अक़दस सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुए और कहा कि ऐ अल्लाह के रसूल! मेरे पास एक ग़ुलाम था वह मैंने इसे दे दिया। हुज़ूर ने पूछा, क्या तुमने इसी तरह अपने सब लड़कों को ग़ुलाम दिया है? उन्होंने कहा नहीं! तो हुज़ूरे अक़दस सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया उस ग़ुलाम को तुम वापस ले लो। एक दूसरी रिवायत में है हुज़ूर ने दरियाफ़्त फ़रमाया– क्या तुमने अपने सब लड़कों के साथ ऐसा ही मुआ़मला किया है? उन्होंने कहा नहीं, तो आपने फ़रमाया –

اِتَّقُوا اللّٰهَ وَاعْدِلُوْا فِیْ اَوْلَادِکُمْ

अल्लाह से डरो और अपनी औलाद में इंसाफ़ का मुआ़मला करो

तो मेरे बाप घर आये और उस ग़ुलाम को वापस ले लिया।

एक और रिवायत में है कि हुज़ूर ने इरशाद फ़रमाया — फिर तुम मुझे गवाह न बनाओ — मैं ज़ालिम का गवाह नहीं बनता।

एक रिवायत में है कि फ़रमाया —

क्या तुम्हें यह बात पसन्द है कि सब लड़के तुम्हारे साथ हुसने सुलूक करें। बाप ने कहा हां — तो आपने फ़रमाया फिर ऐसा मत करो।

इस हदीसे मुबारक ने हर बाप और माँ को यह तालीम दी कि औलाद को लेन–देन के मुआमले में एक दूसरे पर हरगिज़ तर्जीह नहीं देनी चाहिए — बल्कि बराबरी और मुसावात का बर्ताव करना चाहिए। ताकि हर एक के दिल में माँ–बाप का बराबर अदब व एहतेराम और इज़्ज़त क़ाइम हो।

एक और इरशादे रसूल है कि "दाद व देहिश (इनाम व इकराम) में अपनी सब औलाद के साथ बराबरी का मुआमला करो अगर मैं इस मुआमले में किसी को तर्जीह देता तो लड़कियों को तर्जीह देता।"

यानी औलाद के साथ दाद व देहिश में अगर कम व बेश के दर्जात मुक़र्रर होते तो हुज़ूरे अक़दस सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम लड़कियों को ज़्यादा देने की तालीम फ़रमाते: माज़ी पिछले ज़माने में इस सिन्फ़ (वर्ग) को बहुत कुचला गया है और उसे उसके हुक़ूक़ (अधिकारों) से महरूम रखा गया है इसी लिए दीने फ़ितरत इस्लाम में उनकी दिलदारी का पूरा–पूरा लिहाज़ रखा गया है और हुक्म दिया गया है कि अगर तुम्हारे पास लड़के और लड़कियां हों और तुम उन्हें कुछ तक़सीम करो (देना चाहो) तो पहले लड़कियों को दो बाद में लड़कों को दो। इसमें उनकी दिलदारी और उन पर प्यार की ज़्यादती मक़सूद है और यह ज़ाहिर करना है कि अगरचे हमें उससे कोई दुनियावी मनफ़अत की उम्मीद नहीं है मगर सिर्फ़ ख़ुदा व रसूल के हुक्म की बजा–आवरी में हम उसे मुक़द्दम करते हैं।

सिन्फ़े नाज़ुक पे एहसाने रसूले अरबी
अम्ने आलम तहे दामाने रसूले अरबी

जिहाद से अहम काम

इस्लामी हुकूमत में "इमामे वक़्त" पर यह ज़िम्मेदारी आइद होती है कि मुअल्लिमीन व मुतअल्लिमीन का इन्तेज़ाम हुकूमत के बजट से करे ताकि बच्चे इस्लामी तालीमात से महरूम न रह जायें। अल्लामा क़ाज़ी अयाज़ के हवाले से ग़ज़ाउल–अलबाब में है —

"واجب على الامام ان يتعاهد المعلم والمتعلم لذالك ويرزقهما من بيت المال
لان فى ذالك قواما للدين فهو اولىٰ من الجهاد" (غذاء الالباب ص۲۲۰)

बादशाह पर वाजिब है कि पढ़ने और पढ़ाने वाले का इंतेज़ाम खुद हुकूमत की तरफ़ से करे और उनकी तमाम ज़रूरतों को बैतुलमाल से पूरी की जाये। क्योंकि इसमें दीन की पायदारी है। इसलिए यह काम जिहाद से अफ़ज़ल है।

और यह आज़माई हुई चीज़ है कि बच्चों की सही तालीम और तर्बियत के लिए शुरू ही से प्यार मुहब्बत के बर्ताव के साथ पेश आते रहना – और माँ की ममता और बाप की शफ़क़त शीरीनियों में घोल कर तालीमाते

इस्लामी का मशरूब हलक़ूम से उतारना सबसे मुफ़ीद साबित होता है। रसूले अ़रबी सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की सीरते पाक में यह वाक़ेआ मिलता है कि आपकी ख़िदमत में एक आराबी अक़रअ़ बिन हाबिस हाज़िर हुए। उस वक़्त हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम हज़रत हसन को प्यार फ़रमा रहे थे (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम व रज़ियल्लाहु अन्हु) जनाब अक़रअ़ को यह बात अ़ज़मत व वक़ार के ख़िलाफ़ मालूम हुई। उन्होंने कहा मेरे दस बच्चे हैं मगर मैंने कभी किसी को प्यार नहीं किया।

हु़ज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया ––

"जो रहम नहीं करता उस पर भी रहम नहीं किया जाता"

(अबूदाऊद किताबुल–अदब बाबु .क़ुबलतिर–रजुलि वलदहू)

एक दफ़ा सरकार ने इरशाद फ़रमाया ––

"कोई बाप अपनी औलाद को इससे बेहतर कोई अ़तिया (दान) नहीं दे सकता कि वह उसे अच्छी तालीम दे।"

(तिर्मिज़ी किताबुल बिर्रि वस्सिलाते बाबु माजाअ फ़ी अदबिल वलदि)

हज़रत मौलाए कायेनात अली मुर्तज़ा कर्रमल्लाहु तआ़ला वजहहुल करीम का क़ौल है ––

ادّبوا وعلموهم बच्चों को अदब सिखाओ और तालीम दो

हज़रत इब्ने सीरीन से मनक़ूल है ––

اکرم ولدک واحسن ادبہٗ औलाद की इज़्ज़त करो और उसे बेहतरीन अदब सिखाओ।

अदब आमोज़ी में सख़्ती

तालीम व तर्बियत के मैदान में बच्चों को पूरी–पूरी मुहब्बत और शफ़क़त दी जानी चाहिए मगर कभी कभी सिर्फ़ मुहब्बत और नर्मी के बजाये सख़्त रवैये की भी ज़रूरत होती है। लिहाज़ा हस्बे ज़रूरत ज़ज्र व तौबीख़ (डांट–डपट) भी की जाये।

हु़ज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम का फ़रमाने गिरामी है।

مروا اولادکم بالصلوٰۃ وھم ابناء سبع سنین واضربوھم علیہا وھم ابناء عشر وفرقوا بینھم فی المضاجع

अपनी औलाद को नमाज़ पढ़ने का हुक्म दो जबकि वह सात साल के होजायें और नमाज़ के लिए उनको मारो जब वह दस साल के होजायें और इस उम्र को पहुंचने के बाद उनके बिस्तर अलग कर दो।

हज़रत लुक़मान अलैहिस्सलाम के इरशादात में है ––

ضرب الوالد للولد كمطر السماء للزرع

बाप का अदब की तालीम के लिए औलाद को मारना खेती के लिए आसमान की बारिश के मिस्ल है।

हुकमाए उम्मत और उलमाए इस्लाम के फ़रमूदात में है ––

الادب من الآباء والصلاح من الله تعالیٰ

अदब बुज़ुर्गों से और नेकी अल्लाह से

एक मक़ाम पर है ––

من ادب ابنه صغيراً قرت عينه به كبيراً

जिसने बेटे को बचपन में अदब सिखाया बड़े होने पर उससे उसकी आंखों को ठंडक मिलेगी।

इस्लाम में तर्बियते औलाद की अहमियत

बच्चे जहाने फ़ानी की दराज़ी का सबब हैं और अच्छे बच्चे दुनिया को ख़ैर व सलाह (यानी भलाई) की जानिब ले जाने वाले, और रूए ज़मीन को शर व फ़साद, फ़ितना व ख़ूं–रेज़ी से पाक करने वाले हैं। दुनिया में इन्केलाबे इस्लामी बरपा करने के लिए मुजाहिदीन की ज़रूरत है और वह हमारी नस्लों ही में से होंगे। इस लिए क़ुज़ाते इस्लाम (यानी क़ाज़ीए इस्लाम) और मुफ़क्किरीने दीन व शरीअ़त का मुत्तफ़क़ा फ़ैसला है कि ––

"बच्चों की इस्लामी तालीम व तर्बियत जिहाद से अहम फ़रीज़ा है।"

अगर बच्चों को आज़ाद रौ और दुनिया के आज़ाद और शुऊर बाख़्ता माहौल के सपुर्द कर दिया गया तो ताग़ूती हमले उन्हें अपने चंगुल में फँसा कर शैतानी आलएकार बना लेंगे फिर नतीजा यह होगा कि हवा व हवस की आंधियां उन्हें सहरा–ए–नफ़सानियत में सरगरदां (परेशान) रखेंगी और उम्रे अज़ीज़ से "कुछ "ख़ैर" का सौदा करने के बजाये गुनाह और शर व फ़साद, तुग़यान व बग़ावत के कांटे लेकर मौत की वादी में गिर पड़ेंगे, मुसलमान की औलाद हैं और रगों में मोमिन ख़ून की कुछ भी गर्मी है तो रहमते एज़दी से मुमकिन है दमे आख़िर आते–आते तौबा व इस्तिग़फ़ार की तौफ़ीक़ मुयस्सर आजाये। वरना कफ़े अफ़सोस मलते हुए दुनिया से चले जायेंगे और अरस–ए–हयात यह नौहा करेगा कि ––

हैफ़ दर चश्मे ज़दन सोहबते यार आख़िर शुद
रूए गुल सैर न दीदम कि बहार आख़िर शुद

अपनी ज़िन्दगी को खुद इस्लामी राहों पर उस्तवार न कर सकने वाले लोग "दीन व मिल्लत" के अज़ीम जहाज़ का बादबान क्या संभालेंगे खुद डूबने वाला दूसरों को क्या बचाएगा। खुद ख़्वाबे ग़फ़लत में सरमस्त किसी दूसरे ख़्वाबीदा को क्या जगाएगा। इस्लामी और मिल्ली सतह पर ग़ौर किया जाये तो आलमगीर हालत मुसलमानों को अपनी इस्लाह व दुरुस्तगी के साथ–साथ अपने मुसलमान बच्चों की इस्लामी और मिल्ली तालीम व तर्बियत को लाज़मी और ज़रूरी क़रार देते हैं।

क़ुरआन मजीद में इरशादे रब्बी है ––

يَاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا قُوْا اَنْفُسَكُمْ وَ اَهْلِيْكُمْ نَارًا وَّقُوْدُهَا النَّاسُ وَالْحِجَارَةُ عَلَيْهَا مَلٰٓئِكَةٌ غِلَاظٌ شِدَادٌ لَّا يَعْصُوْنَ اللّٰهَ مَآ اَمَرَهُمْ وَيَفْعَلُوْنَ مَا يُؤْمَرُوْنَ۔

(التحریم: ٦٦ آیت ٦)

ऐ ईमान वालो! तुम अपने आपको और अपने अहलो अयाल को उस आग से बचाओ जिसका ईंधन इंसान और पत्थर होंगे, उसपर ऐसे फ़रिश्ते मुक़र्रर हैं जो बड़े तुन्द ख़ू सख़्त मिज़ाज हैं, नाफ़रमानी नहीं करते अल्लाह की जिसका उसने हुक्म दिया है और फ़ौरन बजा लाते हैं जो इरशाद उन्हें फ़रमाया जाता है।

हज़रत उमर फ़ारूक़ की अर्ज़

जब यह आयते करीमा नाज़िल हुई तो हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु अपनी और अपने अहल व अयाल की ज़िम्मेदारियों के एहसास से बहुत मुतअस्सिर हुए, हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमते आलिया में अर्ज़ परदाज़ हुए।

ऐ अल्लाह के रसूल अपने आपको दोज़ख़ से बचाने का मफ़हूम तो समझ में आ गया, मगर हम अहल व अयाल को कैसे आतिशे जहन्नम से बचा सकते हैं? सरकारे आज़म सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया–

تنھونھم عما نھاکم اللہ و تامرونھم بما امر اللہ

(تفسیر روح المعانی)

जिन चीज़ों से खुदा ने तुम्हें रोका है, तुम अपने अहल व अयाल को उनसे रोको, और जिन कामों को अंजाम देने का हुक्म फ़रमाया है तुम उनका अपने अहल व अयाल को हुक्म दो।

सब से अच्छा तोहफ़ा

तिर्मिज़ी शरीफ़ में हज़रत अय्यूब बिन मूसा रज़ियल्लाहु अन्हु अपने वालिद, और अपने दादा के वास्ते से रिवायत करते हैं।

ان رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم قال
مانحل والد ولدہ من نحل احسن من ادب

रसूले खुदा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया। अच्छी तर्बियत से ज़्यादा एक बाप का अपनी औलाद के लिए कोई अच्छा अ़तिया नहीं।

औलाद की महज़ ज़ाहिरी बनाव सिंगार, अच्छी ग़िज़ा, अच्छे लिबास और दुनियवी ज़रूरतों की कफ़ालत ही तक औलाद की ज़िम्मेदारियां समझने वाले वालिदैन –– उनसे बुलन्द होकर उनकी अख़लाक़ी तहज़ीब के लिए हदीसे बाला पर ग़ौर फ़रमायें।

अल्लामा क़रतबी ने तहरीर फ़रमाया है––

وعلینا تعلیم اولادنا واھلینا الدین
والخیر ومالا یستغنی عنہ من الادب

और हम पर वाजिब है कि अपनी औलाद और अहले ख़ाना को दीन सिखायें। अच्छी बातों की और अदब व शाइस्तगी की तालीम दें और जिस तहज़ीब के बग़ैर चारा नहीं वह बतायें।

जज़्बाते अबूवत व उमूमत और फ़रीज़ए तर्बियत

एक मुसलमान बच्चा, सिर्फ़ एक बाप का बेटा और माँ का नूरे नज़र और एक ख़ानदान का मिम्बर ही नहीं है। इससे बहुत बुलन्द होकर, सबसे पहले वह ख़ुदाए वाहिद का बन्दा, रसूले अकरम हुज़ूर मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का उम्मती, और इस्लामी बिरादरी का मिम्बर है। अगर माँ–बाप की तालीम व तर्बियत और अदब आमोज़ी, उसे सच्चा अब्दुल्लाह, अच्छा ग़ुलामे रसूल, और सालेह मुसलमान न बना सकी तो याद रखिये कि ज़िन्दगी की किसी मंज़िल में वह बाप का फ़रमांबरदार बेटा, और माँ का इताअ़त शिआ़र फ़रज़न्द (बेटा), हरगिज़ नहीं बन सकता। इसलिए मुसलमानों को याद रखना चाहिए कि औलाद की इस्लामी तालीम व तर्बियत में बेजा लाड–प्यार, और फ़ुज़ूल आसाइशें, और जो उसकी अहसन आ़दात के रुसूख़ में हाइल हों। सख़्त मुज़िर और नुक़सान–देह हैं। क़ुरआने अज़ीज़ में औलाद और अमवाल को फ़ितना आज़माइशी इसी

लिए कहा गया है कि वालिदैन कभी उनकी ख़्वाहिशों को पूरा करने में वह काम कर गुज़रते हैं जो ख़ुद उनके लिए और उनकी औलाद के लिए हलाकत का सबब होते हैं। तिर्मिज़ी शरीफ़ में हज़रत ख़ौला बिन्त हकीम रज़ियल्लाहु अन्हा से मरवी है।

قالت خرج رسول الله صلى الله عليه وسلم ذات يوم وهو محتضن احد ابنى بنته وهو يقول انكم لتبخلون وتجبنون وتجهلون وانكم لمن ريحان الله۔ (رواه الترمذى)

एक रोज़ रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपने नवासे को गोद में उठाये हुए तशरीफ़ लाये, और आप फ़रमा रहे थे, तुम ही आदमी को बख़ील बनाते हो, तुम ही आदमी को बुज़दिल बनाते हो, तुम ही आदमी को जिहालत पर आमादा करते हो। हालांकि तुम बाग़े इलाही के फूल हो।

पत्थर को तराशो

यह औलाद की मुहब्बत के वही जज़्बात हैं। जिन पर दीन व शरीअत का पहरा नहीं है। वालिदैन की फ़ितरी मुहब्बत जो औलाद से उनके क़ल्ब में रासिख़ होती है। अगर वह क़ानूने इलाही की गिरिफ़्त से आज़ाद हो तो यही औलाद उसे बुख़्ल, बुज़दिली और जिहालत की राहों पर डाल सकती है और अगर उस मुहब्बत पर दीने शरीअत का पहरा लगा हुआ है। क़वानीने क़ुरआनिया की बन्दिश मज़बूत है तो तालीम व तर्बियत के मराहिल में पेश आने वाली तकालीफ़ देकर वालिदैन अपनी औलाद को "चमनिस्ताने कुदरत के फूल" बना सकते हैं।

इस्लाम तो फ़ितरत है कोई जब्र नहीं है
मर्दाने "अ़जूल[1]" आओ तुम्हें सब्र नहीं है
औलाद को अख़लाक़ के तीशों से तराशो
पत्थर की चटानों की कोई क़द्र नहीं है

कुछ बुज़ुर्गों ने फ़रमाया है कि क़ियामत के दिन सब से ज़्यादा परेशानी में वह शख़्स होगा जिसके अहल व अयाल दीन से जाहिल और ग़ाफ़िल होंगे और एक हदीसे पाक में है कि अल्लाह तआ़ला उस शख़्स पर अपनी रहमत नाज़िल करे, जो कहता है कि ऐ मेरी बीवी, ऐ मेरे बच्चो! तुम्हारी नमाज़? तुम्हारा रोज़ा? तुम्हारी ज़कात? तुम्हारा मिस्कीन, यतीम और पड़ोसी?

1. जल्दबाज़

(यानी अपने अहल व अयाल को नमाज़, रोज़ा, ज़कात की तरफ़ तवज्जोह दिलाता है और मिस्कीन, यतीम और पड़ोसी का हक़ याद दिलाता है) उम्मीद है कि हक़ तआला उन सब अहल व अयाल को उस नसीहत करने वाले मर्दे नेक के साथ जन्नत में जमा फ़रमायेगा।

हदीसे मुबारक के अलफ़ाज़ यह हैं--

رحم اللہ رجلا قال یا اھلاہ صلاتکم، صیامکم، زکوٰتکم، مسکینکم
یتیمکم، جیرانکم، لعل اللہ یجمعکم معھم فی الجنۃ (تفسیر روح البیان ج ١٠ ص ٥٨)

सिद्दीक़ी तर्बियत

क़ुरआन मजीद, सूरह अहक़ाफ़ : 46 की आयात नम्बर 13–14–15 और 16 में रब तबारक व तआला मोमिन कामिल की चन्द अहम सिफ़ात (ख़ूबी) का ज़िक्र फ़रमाता है। (अहले इल्म जिसे सहूलत के लिए तफ़सीरुलक़रतबी कहते हैं) के मुफ़स्सिर मुहक़्क़िक़ुल अस्र अल्लामा अबू अब्दुल्लाह मुहम्मद बिन अहमद बिन अबी बकर बिन अलक़रह अलक़रतबी (विसाल सन् 671 हिजरी) और साहिबे तफ़सीरे मज़हरी حَتّٰىٓ اِذَا بَلَغَ से الْمُسْلِمِيْنَ तक का मिस्दाक़ हज़रत अबूबकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु को क़रार देते हैं। ऊपर की आयात में ईमान बिल्लाह की अज़मत और उस पर साबित क़दमी बयान हुई और तमाम मुसलमानों को इस मतलूबे क़ुरआन उसवा की हिदायत पर मुतवज्जेह किया गया। इन आयात में पहले अल्लाह तआला को रब मान कर इस ईमान पर साबित क़दम होजाने का ज़िक्र है। ईमान बिल्लाह को दर्जए कमाल तक पहुंचा कर हर ख़ौफ़, और हर ग़म से बेनियाज़ हो जाने का बयान है और यह कि वही लोग जन्नत वाले हैं (जो औसाफ़े बाला से मुत्तसिफ़ हैं) और वह इनकी दाइमी आरामगाह है। जो उनके आमाले हसना का इनाम है, फिर अपने बाप के साथ हुसने सुलूक का ज़िक्र है और माँ के साथ जो तकालीफ़े हमल और रज़ाअत (दूध पिलाई) बरदाश्त करती है। आगे आयते करीमा तिलावत कीजिए –

حَتّٰىٓ اِذَا بَلَغَ اَشُدَّهٗ وَبَلَغَ اَرْبَعِيْنَ سَنَةً
قَالَ رَبِّ اَوْزِعْنِيْٓ اَنْ اَشْكُرَ نِعْمَتَكَ الَّتِيْٓ
اَنْعَمْتَ عَلَيَّ وَعَلٰى وَالِدَيَّ وَاَنْ اَعْمَلَ

यहां तक कि जब अपने ज़ोर को पहुंचा और चालीस बरस का हुआ, अर्ज़ की, ऐ मेरे रब मेरे दिल में डाल कि मैं तेरी नेअमत का शुक्र करूं जो तूने मुझ पर

صَالِحًا تَرْضٰهُ وَاَصْلِحْ لِیْ فِیْ ذُرِّیَّتِیْ، اِنِّیْ تُبْتُ اِلَیْكَ وَاِنِّیْ مِنَ الْمُسْلِمِیْنَ ۝

(احقاف: ۴۶ آیت ۱۵)

और मेरे माँ बाप पर की और मैं वह काम करूं जो तुझे पसन्द आये, और मेरे लिए मेरी औलाद में सलाह रख! मैं तेरी तरफ रुजूअ लाया और मैं मुसलमान हूं।

तफ़सीर ख़ज़ाइनुल–इरफ़ान में आयते मज़कूरा बाला के तहत सदरुल–अफ़ाज़िल हज़रत मौलाना नईमुद्दीन मुरादाबादी अलैहिर्रहमा लिखते हैं :

"यह आयत हज़रत अबूबकर सिद्दीक़ रज़िल्लाहु तआला अन्हु के हक़ में नाज़िल हुई, आपकी उम्र सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से दो साल कम थी, जब हज़रत सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की उम्र अठारह साल की हुई तो आपने सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सोहबत इख़्तियार की, उस वक़्त हुज़ूर की उम्रे शरीफ़ बीस साल की थी, हुज़ूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम की हमराही में तिजारत के लिए मुल्के शाम का सफ़र किया, एक मन्ज़िल पर ठहरे, वहां एक बेरी का पेड़ था हुज़ूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम उसके साये में तशरीफ़ फ़रमा हुए। क़रीब ही एक राहिब रहता था, हज़रत अबूबकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु उसके पास चले गए। राहिब ने आपसे कहा यह कौन साहिब हैं जो बेरी के साये में जलवा फ़रमा हैं हज़रत अबूबकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फ़रमाया यह मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) बिन अब्दुल्लाह बिन अब्दुलमुत्तलिब हैं। राहिब ने कहा ख़ुदा की क़सम यह नबी हैं। उस बेरी के साये में हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के बाद आज तक उनके सिवा कोई नहीं बैठा। यही आख़िरुज़्ज़मां हैं, राहिब की यह बात हज़रत अबूबकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के दिल में असर कर गई और नबूवत का यक़ीन आपके दिल में जम गया, और आपने सोहबत शरीफ़ की मुलाज़मत इख़्तियार की, सफ़र व हज़र में आपसे जुदा न हुए, जब सय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की उम्रे शरीफ़ चालीस साल की हुई, और अल्लाह तआला ने आपको अपनी नबूवत व रिसालत के साथ सरफ़राज़ फ़रमाया तो सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु आप पर ईमान लाये उस वक़्त हज़रत सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की उम्र अड़तीस साल थी। जब हज़रत सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की उम्र चालीस

साल की हुई तो उन्होंने अल्लाह तआ़ला से यह दुआ की"
رَبِّ اَوْزِعْنِیْ ۱۰ (ख़ज़ाइनुल–इरफ़ान मअ़ कन्ज़ुल–ईमान सफ़हा 108)

ग़ौर फ़रमाइये! .क़ुरआन मजीद का मतलूब, ऐसा मोमिन है जो ईमानियात के तक़ाज़ों को बदर्जा–ए–अतम पूरा करे, आमाले सालिहा कापाबन्द हो और हुक़ूक़ुल–इबाद की निगहदाश्त करता हो इस ज़िम्न में वालिदैन के साथ हुसने सुलूक का बतौरे ख़ास ज़िक्र है और अपनी औलाद के बारे में सअ़ी व जुहद के साथ–साथ रब्बे कायनात से उनकी सालिहीयत की दुआयें भी करता है और हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु इसकी बेहतरीन मिसाल हैं, वह ऐसे ख़ुश–नसीब सहाबी हैं कि उनकी निगाहों के सामने उनकी चार पुश्तों को दौलते ईमानी से सरफ़राज़ी मिली। ऊपर की जानिब देखिये तो उनके वालिद और नीचे उतरिये तो उनके बेटे बेटियां और उनकी औलादें ईमानी दौलत से बहराहमन्द हुई और सब के सब न सिर्फ़ यह कि नाम के मुसलमान बल्कि क़ुरआनी नमून–ए–इस्लामी की चलती फिरती पहचान बनकर तारीख़े इस्लाम में चमके–

सिदक़ो सफ़ा, मुहब्बतो उलफ़त हैं अबू बकर
अज़्मो सख़ा, शुजाअ़तो जुरअत हैं अबूबकर
इस्लाम की तारीख़ से पूछो तो कहेगी
उम्मत के लिए पैकरे रहमत हैं अबूबकर

बच्चों में सलाहियते क़बूल

घरेलू माहौल का बच्चों की ज़िन्दगी पर बहुत असर पड़ता है, घर के लोग अगर नेक–ख़ू, शरीफ़ और ख़ुश–गुफ़्तार होते हैं तो उस असर से बच्चे लाज़िमन ख़ुश–ख़ुल्क़, कुशादा मिज़ाज और मीठी ज़बान पा लेते हैं। इसी तरह शराबी, अय्याश और गाली–गुलूज करने वालों के घर पर परवरिश पाने वाला बच्चा इन असरात से महफ़ूज़ नहीं रह पाता। अदब और सन्जीदगी की तालीम बच्चों को सिर्फ़ पढ़ा कर नहीं दी जाती बल्कि–– हरकतों, बातों, खिलौनों और तवज्जोहात को मबज़ूल करने वाली दूसरी चीज़ों से भी बच्चों की ज़ेहनी तर्बियत होती है।

बचपन का ज़माना एक नर्म व नाज़ुक मिट्टी के तूदे की हैसियत रखता है। माहौल, तालीम, अतराफ़ व जवानिब और क़ुव्वते बासिरा, सामिआ,

ज़ाइक़ा, लामिसा और क़ुव्वते आक़िला के ज़रीआ इस तोद–ए–ख़ाक को जो कुछ मुयस्सर हो जाता है इसी लिहाज़ से उसमें अच्छे और ख़राब जौहर पैदा होते हैं।

इब्ने इस्हाक़ से मन्क़ूल है कि हज़रत अली बचपन ही से रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम से मानूस थे। एक बार जब वह हुज़ूर के घर आये तो उन्होंने देखा कि हुज़ूरे अक़दस सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और उम्मुलमोमिनीन ख़दीजतुल–कुबरा (रज़ियल्लाहु अन्हा) अभी नमाज़ पढ़ कर फ़ारिग़ हुए हैं कि हज़रत अली ने पूछा आप लोग यह क्या कर रहे थे? हुज़ूरे अक़दस सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया "यह अल्लाह का ऐसा दीन है जिसे उसी ने ख़ुद पसन्द फ़रमाया है, और उसी की तबलीग़ के लिए पैग़म्बर भेजे। लिहाज़ा मैं तुम्हें भी उस अल्लाह की तरफ़ दावत देता हूं जो तनहा है उसका कोई शरीक नहीं और तुमको उस की इबादत की तरफ़ बुलाता हूं–और लात व उज़्ज़ा (अ़रब के काफ़िरों के देवता) से किनारा कशी इख़्तियार कर लो। हज़रत अली ने फ़रमाया—– यह ऐसी बात है कि जिसे मैंने इससे क़ब्ल कभी नहीं सुना। मैं अपने वालिद से ज़िक्र किये बग़ैर इस सिलसिले में अभी कोई फ़ैसला नहीं कर सकता। हुज़ूरे अक़दस को हज़रत अली का यह कहना नागवार महसूस हुआ —– आप नहीं चाहते थे कि इस्लाम का एलान करने से पहले ही बात आम हो जाये। आपने फ़रमाया—– ऐ अली! अगर तुम इस्लाम नहीं लाते तो इस बात को पोशीदा रखना। अगरचे हज़रत अली उस रात ईमान नहीं लाये मगर —– अल्लाह तआ़ला ने उनके दिल पर ईमान पुख़्ता कर दिया। अगले रोज़ सुबह होते ही ख़िदमते रसूल में हाज़िर हुए —– और कहा —– आपने कल मुझे किस चीज़ की तरफ़ बुलाया था? आपने फ़रमाया गवाही दो कि अल्लाह सिर्फ़ एक है उसका कोई शरीक नहीं —– और लात व उज़्ज़ा का इन्कार करो —– और जिनको शरीके ख़ुदा बताया जाता है उनसे बेज़ार हो जाओ। हज़रत अली ने यह सब बातें क़बूल कीं इक़रार फ़रमाया और इस्लाम लाये। वह इसके बाद अपने बाप अबू तालिब से छुप–छुप कर हुज़ूरे अक़दस के पास आकर इस्लाम की तालीम हासिल करते थे। इस्लाम लाने के वक़्त उनकी उम्र शरीफ़ दस साल थी।"

(अलबिदाया वन्निहाया सफ़हा 24 जिल्द 3)

अबू तालिब ने हुज़ूरे अक़दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के साथ हज़रत अली को पहली बार, बतने नख़ला में नमाज़ पढ़ते हुए देखा तो पसन्दीदगी का इज़हार फ़रमाया।

ग़ौर कीजिए कि सोहबते रसूल की बरकत से दस साल के बच्चे ने इल्म व शुऊर की कौन–कौन सी मंज़िलें तय कीं कि बाबे मदीनतुल–इल्म बन गए।

एक वाक़िआ

इस्लाम अपने अन्दर नूरानियत रखता है, .क़ुरआन ख़ुद नूर है मगर तेज़ से तेज़ बल्ब को अगर काले शीशों में महसूर (सीमित) कर दिया जाये तो उसकी चमक अपना असर खोदेगी और किरनें फ़ज़ा को रौशनी नहीं दे सकतीं। अनवारे इस्लाम और अनवारे .क़ुरआन को साफ़ शफ़्फ़ाफ़ शीशों और उजले आईनों की ज़रूरत है। बच्चों का दिल व दिमाग़ अगर .क़ुरआन की रौशनी से अरास्ता किया जाये तो बातिन ख़ुद ब–ख़ुद मुनव्वर होकर निखर उठेगा।

मुझे ख़ूब अच्छी तरह याद है कि नीदर लैण्ड इस्लामी सोसाइटी के इबादत ख़ाने में जो एमस्टरडम बिलमर मीर की बिल्डिंग कोवन ओरड के निचले हिस्से में था। मैं .क़ुरआन मजीद की तिलावत कर रहा था और एक माँ अपने बच्चे को साथ लिए उसके क़रीब से गुज़र रही थी। बच्चे की उम्र बमुश्किल 4 या 5 साल रही होगी––– बच्चा माँ की उंगली छोड़कर तिलावते .क़ुरआन सुनने लगा। माँ भी कुछ देर उसके इन्तेज़ार में खड़ी रही। मैं तो मसरूफ़ था मगर उस जानिब तवज्जोह उस वक़्त हुई जब माँ बच्चे को ज़बरदस्ती ले जाने लगी और बच्चा ज़ोर–ज़ोर से रोते हुए रुक कर .क़ुरआन मजीद सुनने की ज़िद करने लगा।

उसी रोज़ वह औरत इस्लामिक सेन्टर में दोबारा आई और उसने कहा कि आज मैं ने यह अजीब बात देखी जो समझ में नहीं आती––– मेरा बच्चा इतना ज़िद्दी कभी नहीं था और न ही मैंने इतनी दिलचस्पी से इसको कोई चीज़ सुनते देखा। आख़िर यह क्या चीज़ थी जिसे सुनने के लिए वह इतना ज़िद्दी हुआ––– यहां तक कि घर जाकर भी आने की ज़िद करता रहा–––?

उसे बताया गया कि यह ख़ुदाए वाहिद का कलाम ".क़ुरआन मजीद" है जो दुनिया में एक ज़िन्दा मोअ्जिज़ा है। उसका असर .क़ुलूबे इंसानी पर

होता है और उसकी कई मिसालें और सुबूत मौजूद हैं— उसने कहा यह तो मेरे लिए नाक़ाबिले यक़ीन है— तो मैंने उसे जवाब दिया कि — यूरोपियन दुनिया म्युज़िक की दीवानी है। साज़ की आवाज़ पर नाच गाना और दीवानगी की हरकतें यहां का आम मशग़ला है। उन आवाज़ों में यह तासीर जिस ज़ात ने रखी है, क़ुरआन मजीद उसी पाक ज़ात का कलाम है उसमें असर क्यों न हो–?

बाज़ नफ़सियात

कुछ वालिदैन की आदत होती है कि बच्चों की नाज़ुक मिज़ाजी (कोमलता) का एहसास किये बग़ैर उन्हें कोसना शुरू कर देते हैं। उससे बच्चों में एहसासे कमतरी, एहसासे नाकामी पैदा होता है। इसके बजाये उनके सालेह और मुसबत जज़्बात को उभारा जाये, नेक बच्चों, अच्छे आदमियों की अहमियत के वाक़िआत और क़िस्से सुनाये जायें। तर्बियत के सिलसिले में यह ख़्याल बहुत ज़रूरी है कि मुअल्लिम और वालिदैन में से किसी को बच्चा अपना दुश्मन या मुख़ालिफ़ और सख़्ती करने वाला न समझ बैठे बल्कि उनको अपना मुख़लिस हमदर्द और भला चाहने वाला तसव्वुर करे। अक्सर दुनिया के कामयाब इंसानों के लिए नमून–ए–अमल उनके वालिदैन और उस्ताद होते हैं।

बच्चों के जज़्बात बड़े ही नाज़ुक होते हैं। इन आबगीनों को किसी भी ठेस से महफ़ूज़ रख कर पुख़्तगी मुयस्सर आजाये तो वह ज़िन्दगी के मैदान में कामयाब साबित होते हैं।

तर्बियत के माहिरीन का ख़्याल है कि —वालिदैन को अपने औक़ात में से एक ख़ास हिस्सा बच्चों के लिए रखना चाहिए। जिसमें उनकी ख़्वाहिशात के एहतेराम में कुछ काम किये जायें। इस तरह खेल–खेल में भी बच्चों के जज़्बात और उनकी सलाहियतें वालिदैन और मुअल्लिमीन पर खुलती हैं।

बुनियादी तज़ाद

यूरोपियन ज़िन्दगी के क़वानीन का मेहवर (केन्द्र) रोज़ी रोटी है। और इन तमाम मुलकों के क़वानीन निज़ामे तालीम से लेकर मज़हबियत तक सब इसी मेहवर के गिर्द घूमते हैं — अख़लाक़ (चाल–ढाल) हया और

इज़्ज़ते नफ़्स का इस्लामी मेअ़यार इस दुनिया के बिल्कुल उलटा है। यानी इस्लामी ज़िन्दगी का मेहवर रिज़ाए इलाही (खुदा की खुशनूदी) है —— जो नफ़्स और शैतान की मुख़ालिफ़त की बुनियाद पर क़ाइम है —— इस तरह से हम यूरोप की ज़िन्दगी और मामूलाते ज़िन्दगी पर गौर करते हैं तो ज़हरे ह लाहल के सिवा कुछ नज़र नहीं आता।

हुकूमती मदरसों की तालीमात और आज़ादाना माहौल की बन्दिश में आकर भी इस्लाम व ईमान–तहारत व पाकीज़गीए ख़्याल अपने बच्चों में बाक़ी रखने, और मुसलमान रहने के ख़्वाहिशमन्दों को निहायत जतन करने होंगे और इस जिहादे ज़िन्दगी का सबसे बड़ा मैदान अपने घर की चार दीवारी है।

इस गहवारा में बच्चों को यूं न रखा जाये जैसे परिन्दे को पिंजरे में मुक़ैयद रखा जाता है। क्यों कि ऐसा करने वालों ने नतीजा भी देख लिया कि सैकड़ों नौजवानों ने मौक़ा पाते ही न सिर्फ़ राहे फ़रार इख़्तियार की बल्कि दीन व मज़हब के भी सख़्त बाग़ी बन बैठे।

वजह यह है कि 18 साल के बाद उन मुलकों में किसी भी लड़के या लड़की को "ख़ुद मुख़्तारी" का सर्टीफ़ीकेट मिल जाता है। इसलिए जिन लोगों ने इस ज़माने से पहले बच्चों को दीनी तालीमात – अख़लाक़ और पाकीज़गीए क़ल्ब व नज़र की रौशनी में ला खड़ा किया है, और उनके दिलों में अल्लाह का ख़ौफ़ और मुहब्बत – हयात बादे ममात और इस्लामी अ़क़ीदे के नुक़ूश उतार दिये हैं —— वह तो निहायत कामयाब व कामराँ हैं। और जो उस माहौल की कीचड़ से ख़ुद अपनी ज़िन्दगी के दामन को महफ़ूज़ न रख सके। हुसूले दौलत, आराम तलबी, वक़्त गुज़ारी और मौज–मस्ती के सिवा अपना कोई मशग़ला ही न रखा। उनमें से अक्सर औलाद की इस्लामी तालीम व तर्बियत पर ध्यान नहीं दे पाते, और नतीजा यह होता है कि कुछ नुकूदे दुनिया (यानी दुनिया की दौलत) ज़रूर हाथ आते हैं मगर घर और ख़ानदान से ईमान व इस्लाम का नूर रुख़्सत हो जाता है।

आज मुस्लिम रहनुमाओं के सामने जो सख़्त मरहला दर–पेश है वह यह है कि यूरोप में रहने वाले मुसलमान भी बेशतर ऐसे हैं जो इस्लामी तालीमात से अंजान और मज़हबी दिलचस्पियों से आरी (दूर) हैं। जिन मुसलमानों का तअ़ल्लुक़ उन देशों से है जो धन–दौलत के लिहाज़ से

पिछड़े हैं, और वहां की परेशान--कुन मसरूफ़ियात और मआशी बद हाली से इस इत्मीनान बख़्श फ़ज़ा में आने के बाद, सुस्ती, ग़फ़लत और आराम तलबी के ख़राब शिकंजों ने उन्हें अपनी गिरिफ़्त में ले लिया। जिनमें इस्लाम की बुनियादी क़दरें मज़बूत थीं वह तो कुछ अल्लाह रसूल से वाबस्ता रहे। और ऐसे लोगों की तादाद मेरे ज़ाती अन्दाज़े में 15 फ़ीसद से ज़्यादा नहीं होगी। बाक़ी 85 फ़ीसद को भी कई ख़ानों में तक़सीम किया जा सकता है। एक बड़ी तादाद तो ऐसी है जो बेअमल, ग़ाफ़िल और काहिल ज़रूर है मगर दीन से वाबस्तगी क़ाइम रखती है। इस हद्द तक कि तरीक़ए मौत व ज़िन्दगी, तजहीज़ व तकफ़ीन और ईदैन के मौक़े पर अपनी दीनदारी ज़ाहिर करती है। एक तबक़ा ऐसा है जो सिर्फ़ माहौल और अकसरियत के अमल व किरदार ही की ज़बान समझता है। वह तो माहौल के धारे में पूरी तरह बहा हुआ है। मगर सिर्फ़ ख़ानों में तक़सीम कर लेने से हम अपने मुसलमान भाईयों के फ़राइज़ से बरी तो नहीं हो जायेंगे --- आइये ज़रा इस रुख़ से भी ग़ौर करें।

मग़रबी दुनिया में हर निज़ाम हमें मुनज़्ज़म और मुरत्तब दिखाई देता है। जो चीज़ ग़ैर मुनज़्ज़म और तितर--बितर है वह सिर्फ़ मुसलमानों के दीनी व इस्लामी मुआमलात हैं। साथ ही हमें यह ख़्याल आता है कि इसके लिए आलमे इस्लाम की ज़िम्मेदार तहरीकों, तन्ज़ीमों संस्थाओं और इदारों को बाक़ाइदा निज़ाम क़ाइम करना चाहिए जिस तरह मसीहियत और दूसरी मिल्लतें हर तरफ़ से मुनज़्ज़म होकर काम करती हैं। मगर अमलन ऐसा नहीं है। आलमी इस्लामी तन्ज़ीमों के मातहत भी यूरोप में कई बड़े काम हो रहे हैं मगर मुसलमानों की तादाद और मसाइल के इख़्तिलाफ़ का लिहाज़ करके हर मोड़ पर इस्लामी सिपाहियों का तअय्युन और ख़ुद मुसलमानों में ज़िम्मेदारी का शुऊर व एहसास की बेदारी यह निहायत बुनियादी ज़रूरत है। अब सवाल यह पैदा होता है कि यह ज़रूरतें किसके ज़रीये पूरी हों। ज़ाहिर बात है कि तबलीग़ व इशाअते इस्लाम और अमर--बिलमअरूफ़ व नही अनिल मुन्कर, मुसलमानों को सालेह और मुत्तक़ी बनाने की कोशिश करना, यह सब उलमा--ए--इस्लाम और दाअ़ियाने किताब व सुन्नत का ज़िम्मा है।

दीन के नाम पर

तारीख़े इस्लाम शाहिद है कि मुबल्लिग़ीने दीन व शरीअ़त में ऐसे पाकीज़ा नुफ़ूस भी गुज़रे हैं जिनकी नेक नफ़सी बेग़र्ज़ी और इख़लास फि–दीन के सबब शहर का शहर दायेर–ए–इस्लाम में दाख़िल हुआ। इण्डोनेशिया में इस्लाम मुसलमान सालेह ताजिरों के ज़रीए फैला। ग़ौर कीजिए कि ताजिर अपनी तिजारत का काम अगर बेनफ़्सी और नेक नीयती से करता है और इसमें भी इस्लामी उसूल व क़वानीन की रिआयत करता है तो दुनिया उसकी दीवानी हो जाती है। फिर क्या वजह है कि उलमा की ख़ासी तादाद होने के बावजूद इस्लाम की तरक़्क़ी की राहें बन्द देखाई देती हैं? इशाअ़ते इस्लाम में फ़क़ीरों और दरवेशों ने भी बुनियादी किरदार अदा किया है और इन रूहानी हकीमों ने अपनी सोज़िशे क़लबी (दिल की गर्मी) से माहौल की सख़्तियों को मोम बनाया है। इनके पेशे नज़र हर मंज़िल पर इस्लाम की तरक़्क़ी नामे इलाह की किब्रियाई होती थी। दुनिया का मैल उनकी आस्तीनों को छू नहीं पाता था। वह बेग़र्ज़ होकर मज़हब की सरबुलन्दी का काम करते थे।

तातारियों को इस्लाम की रौशनी देने वाला भी एक क़ादिरी दरवेश ही था जिसने चंगेज़ के सपूतों में इस्लाम का ग़लग़ला बुलन्द किया और नतीजतन ––

रहनुमा मिल गये कअ़बे को सनमख़ाने से

आज यूरोप की ज़मीन पर इन्हीं मुक़द्दस रूहानी सिलसिलों के ज़रीए कुछ लोगों ने हुसूले दुनिया का बाज़ार गर्म कर रखा है। नफ़सानियत की खींच–तान में मुब्तला दुनिया को बेलौस, ख़ाकसार दरवेशाने मुहम्मद की ज़रूरत है। तिजारत–पेशा सौदागराने मिल्लत की नहीं। आख़िर मफ़ाद अन्देश क़िस्म के नाम–निहाद दरवेशों के ज़रीये यूरोप में आबाद हमारी नई नस्ल को क्या हासिल हुआ? हमारे बच्चे बच्चियों के लिए कौनसा नुस्ख़–ए–कीमिया बरआमद हुआ जो उन शाहीं बच्चों को इस्लामी बाल व पर से मालामाल कर सकें, 'हां एक चीज़ ज़रूर मिली, बाहमी नफ़रत, इख़्तिलाफ़, बिखराव, और गिरोहबन्दी का घिनावना सबक़। जिसने ख़राब ज़ेहनों पर बाहम भेद–भाव और दुश्मनी व हसद की मुहरें लगाकर बन्द कर दिया––– क़ुरआने अज़ीम ने तो إِنَّمَا الْمُؤْمِنُونَ إِخْوَةٌ 'मोमिन भाई–भाई.

हैं" का सबक़ दिया था। मगर अफ़सोस पन्द्रहवीं सदी के बाद मुबल्लिग़ीन ने इस्लाम के इस सबक़ को अपने मफ़ाद की क़ुरबानगाह पर भेंट चढ़ा दिया।

रब्बे क़दीर उलमा–ए–इस्लाम मुर्शिदीने दीन में अपने सच्चे दीन की सच्ची ख़िदमत के जज़्बात तौफ़ीक़ फ़रमाये। आमीन0

औलाद के निकाह की ज़िम्मेदारी

औलाद के बालिग़ हो जाने के बाद माँ–बाप की यह भी ज़िम्मेदारी है कि नेक और सालेह ख़ानदान में उसका निकाह करें। शादी की उम्र को पहुंच जाने के बाद भी बिला वजह निकाह में देर करना, और बैठाये रखना बुरा है और ऐसे में औलाद से अगर (कोई) गुनाह सरज़द हो जाये तो उसका वबाल सरपरस्तों पर भी आइद होता है। हालैण्ड में देखा जाता है कि बहुत से माँ–बाप अपने लड़कों–लड़कियों को बहुत देर तक पैसे के लालच में बैठाये रखते हैं। यहां की हुकूमत का क़ानून है कि पढ़ने वाले लड़के और लड़कियों को ज़्यादा पैसे बतौर वज़ीफ़ा मिलते हैं और वह अगर माँ–बाप के हमराह होते हैं तो सारे माली फ़ाइदे उन्हीं को हासिल होते हैं लड़कियों की शादी होने के बाद वह अपने शौहरों के घर आबाद करती हैं –– और लड़के शादी शुदा होकर माँ–बाप से अलग एक नये ख़ानदान की बुनियाद उस्तुवार करते हैं और माँ–बाप से माली फ़ाइदे मिलने बन्द हो जाते हैं। कुछ लोग यहां ऐसे भी हैं जो औलाद के आराम और उनकी दीनी देख–भाल को छोड़ कर बालिग़ होने के बाद भी ज़्यादा दिनों तक उन्हें तालीम में मशग़ूल रखते हैं। हालांकि शादी के बाद भी तालीमी सिलसिला जारी रखा जा सकता है। और यूरोप की मिली जुली सोसाइटी और फ़हश उसूले तालीम में एक तरफ़ तो लड़के लड़कियां क़ब्ल अज़ वक़्त ही शुऊर की हदें फलांग लेते हैं –– दूसरी तरफ़ बरवक़्त जाइज़ जिन्सी तस्कीन यानी निकाह के मवाक़ेअ़ न मुयस्सर होने पर वह अपने उसी माहौल में आफ़ियत की राह तलाश करने की फ़िक्र में इज़्ज़त–आबरू और पाकबाज़ी की चादर तार–तार कर लेते हैं। *(अलअयाज़बिल्लाह0)*

मुसलमानों को इस घिनावनी हरकत की क़बाहतों से आगाह होना चाहिए –– और अपने लड़के लड़कियों का बालिग़ होने के बाद जितनी जल्दी मुमकिन हो निकाह कर देना चाहिए। रसूले आज़म व अकरम

सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम का इरशादे गिरामी है, जिसे अबूसईद खुदरी और इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुम रिवायत करते हैं —

"जिसे अल्लाह तआ़ला औलाद दे तो उसे चाहिए कि उसका अच्छा नाम रखे और उमदा तर्बियत दे और सलीक़ा सिखाये"

فَإِذَا بَلَغَ فَلْيُزَوِّجْهُ فَإِنْ بَلَغَ وَلَمْ يُزَوِّجْهُ فَأَصَابَ إِثْمًا فَإِنَّمَا إِثْمُهُ عَلَى أَبِيهِ
(رواه البيهقي في شعب الايمان)

जब वह सिन्ने बुलूग़ को पहुंचे तो उसके निकाह का इन्तेज़ाम करे अगर बालिग़ होने के बाद भी निकाह का बन्दोबस्त नहीं किया— और वह हराम में मुब्तला हुआ तो उसका बाप उस गुनाह का ज़िम्मेदार होगा।

रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम का यह इरशादे गिरामी इस सिलसिले में कोताही बरतने वाले मुसलमान के लिए ताज़ियान–ए–इबरत है। और ग़रीब देशों के मुसलमानों में रस्म व रिवाज की बेजा ज़न्जीरों ने मुसलमानों को जकड़ रखा है। जहेज़ और तोहफ़े के नाम पर लड़कियों की ज़िन्दगियां बरबाद की जाती हैं। और कितनी ही कुवाँरी लड़कियाँ अपने अरमानों के सपने सजाये उम्रे तबअ़ी के क़ीमती औक़ात गंवा देती हैं। मगर बुरा हो रिवाजों और रस्मों के ख़ूंख़्वार इफ़रीत का, जिसमें तौहीद व रिसालत के शैदाई मुसलमानों को भी शिकार बना रखा है काश हर इलाक़े और हर तबक़े के मुसलमान कमर बस्ता होकर इस बिदअ़ते शनीआ़ के ख़िलाफ़ एलाने जिहाद करें। और इन बुरी लानतों से मुसलमानों के माहौल को पाक व साफ़ करके सुन्नते रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की रौशनी में अपनी समाजी ज़िन्दगी को जन्नत निशान बनायें।

मशअलतुल–इरशाद

इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िल बरैलवी अलैहिर्रहमा ने "मशअ़लतुल इरशाद इला हुक़ूक़िल–औलाद" में इस उनवान (विषय) पर मुख़्तसर मगर जामेअ़ हिदायतें बयान फ़रमाई हैं। उनमें से कुछ नक़ल की जाती हैं—

"वजूदे औलाद से पहले औलाद का हक़ यह है कि अपना निकाह रज़ील (नीच), व मज़हब ना–आशना (दीन से दूर) लोगों में न करे। क्योंकि अच्छी और बुरी रगें रंग लाती हैं। हमबिस्तरी की इब्तेदा बिस्मिल्लाह से करे

ताकि बच्चे में शैतान शरीक न हो। हमबिस्तरी के वक़्त औरतों की शर्मगाह की तरफ़ न देखे इससे बच्चा के अन्धे होने का अन्देशा है। बच्चा पैदा हो तो फ़ौरन सीधे कान में अज़ान और बायें में तकबीर कहे। छुवारा वग़ैरह मीठी चीज़ चबा कर मुँह में डाले कि हलावते अख़लाक़ की फ़ाल अच्छी हो। सातवें रोज या फिर जब मुमकिन हो अक़ीक़ा करे। सर के बाल उतरवाये, बालों के बराबर चाँदी तौल कर ख़ैरात करे। सर पर ज़ाफ़रान लगाये, इस्लामी नाम रखे जैसे अब्दुल्लाह, अब्दुर्रहमान, अहमद, हामिद, हसन, मुहियुद्दीन, मुईनुद्दीन। माँ खुद दो साल तक दूध पिलाये या कोई नेक ख़ातून दूध पिलाये। क्यों कि दूध का असर भी तबीअ़तों पर पड़ता है। बच्चे को पाक कमाई से पाक रोज़ी खिलाये कि नापाक माल नापाक ही आ़दत डालता है।

खुदा की इन नेअ़मतों (औलाद) के साथ हमदर्दी का बरताव करे और उन्हें मुहब्बत व प्यार करे। शरअ़ी हुदूद के अन्दर उनकी दिलजूई करता रहे। बहलाने के लिए झूटा वादा न करे। चन्द बच्चे हों तो जो चीज़ दे सबको बराबर और यकसां दे। ज़बान खुलते ही सबसे पहले *अल्लाहु अल्लाहु* और फिर *लाइला–ह इल्लल्लाहु* फिर पूरा कलिमा तय्यबा सिखाये। जब बच्चे को तमीज़ आने लगे तो अदब सिखाये, खाने, पीने, हंसने, बोलने, चलने–फिरने, हया, लिहाज़, बुज़ुर्गों की ताज़ीम, माँ–बाप, उस्ताद, और बेटी को शौहर की भी फ़रमांबरदारी के तरीक़े और अदब बताये।"

क़ुरआन मजीद पढ़ाये, नेक उस्ताद, सालेह, मुत्तक़ी, बूढ़े बुज़ुर्ग के सपुर्द करे और लड़की को नेक पारसा औरतों से पढ़वाये, बाद ख़त्मे क़ुरआन हमेशा तिलावत की ताकीद रखे। अक़ाइदे इस्लाम व सुन्नत सिखाये कि लौहे सादा फ़ितरते इस्लामी व क़बूले हक़ पर मख़लूक़ है।

हुज़ूरे अक़दस सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मुहब्बत व ताज़ीम उनके दिल में डाले कि अस्ले ईमान व ऐने इस्लाम है।

सात बरस की उमर से नमाज़ की ज़बानी ताकीद शुरू करदे। इल्मे दीन ख़ास कर वज़ू, ग़ुस्ल, नमाज़, रोज़ा के मसाइल, तवक्कुल, क़नाअ़त, ज़ुहद, इख़लास, तवाज़ुअ़, अमानत, सिदक़, अ़दल, हया, सलामते सदर व लिसान वग़ैरहा ख़ूबियों के फज़ाइल — हिर्स, तमअ़, हुब्बे जाह, हुब्बे दुनिया, रिया, व उ़जब, तकब्बुर, ख़ेयानत, किज़्ब, कलिम–ए–फ़ुहश, ग़ीबत, हसद, कीना वग़ैरहा की ख़राबियां समझाये।

पढ़ाने सिखाने में रिफ़्क़ व नर्मी मलहूज़ रखे। मौक़ा पर चश्मनुमाई, तम्बीह, तहदीद करे मगर कोसे नहीं।

ज़िनहार--ज़िनहार (हरगिज़--हरगिज़) बुरी सोहबत में न बैठने दे कि यारे बद मारे बद से बदतर है। फ़ुहश बातों, और माहौल से बचाये कि नर्म शाख़ जिधर झुकाये झुक जाती है। जब दस बरस का हो नमाज़ मार--मार कर पढ़ाये। इस उम्र से अपने या किसी के साथ न सुलाये। जुदा पलंग पर सुलाये। जब जवान हो शादी करदे और शादी में उन ही बातों को मलहूज़ रखे जो ऊपर बयान हुयीं। अब जो काम ऐसा कहना हो जिसमें नाफ़रमानी का शुबहा हो उसे हुक्म के तौर पर न कहे बल्कि रिफ़्क़ व नर्मी से बतौरे मशवरा कहे। उसे मीरास से महरूम न करे। जैसे कुछ लोग अपनी कुल जायदाद किसी ग़ैर को दे देते हैं।

यह अहकाम लड़के और लड़कियों के लिए आम थे। अब चन्द हुक़ूक़ सिर्फ़ लड़कों के लिखे जाते हैं।

लिखना, पढ़ना, सिपह गरी सिखाये। सूरह माइदा की तालीम दे। एलान के साथ ख़तना करे।

लड़कियों के चन्द हुक़ूक़

लड़कियों के पैदा होने पर नाखुशी न करे बल्कि नेअ़मते इलाहिया जाने-- सीना, पिरोना, खाना पकाना सिखाये, सूरह नूर की तालीम दे। लिखना सिखाने में फ़ितने का एहतेमाल है इस लिए न सिखाये। बेटों से ज़्यादा दिलजूई और दिलदारी करे कि उनका दिल बहुत थोड़ा होता है। कुछ देने में उन्हें और बेटों को कांटे की तौल बराबर रखे। जो चीज़ देनी हो पहले उन्हें देकर लड़कों को दे। नौ बरस से ख़ास निगहदाश्त रखे। न अपने पास सुलाये न भाई वग़ैरह के पास सोने दे। शादी बारात में जहां गाना नाच हो हरगिज़ न जाने दे अगरचे ख़ास अपने भाई के यहां हो कि गाना सख़्त संगीन जादू है और इन नाज़ुक शीशों को थोड़ी ठेस बहुत है।

बल्कि बेगानों में जाने की मुतलक़न बन्दिश करे, घर को उन पर जेलख़ाना कर दे। बाला ख़ानों पर न रहने दे। घर में लिबास व ज़ेवर से आरास्ता करे कि पैग़ाम रग़बत से आयें। जब कुफ़ू (बराबरी का रिश्ता) मिले निकाह में देर न करे। हो सके तो बारह बरस की उम्र में ब्याह दे। ज़िनहार--ज़िनहार (हरगिज़--हरगिज़) किसी फ़ासिक़--फ़ाजिर बदमज़हब

के निकाह में न दे। यह वह हुक़ूक़ हैं जो अहादीसे मरफ़ूआ की रोशनी में साबित हैं। इनमें से अक्सर मुस्तहब्बात हैं। बाज़ वाजिबात–

(मशअलतुल–इरशाद एलाहुक़ूक़िल–औलाद)

इन हिदायात की रौशनी में जो औलाद परवान चढ़ें इन्शाअल्लाह वह सच्ची दीनदार और इस्लामी अतवार का नमूना होंगी। यह तो तदबीरें हैं अपनी मसाई–ए–जमीला के साथ–साथ औलाद की सालिहियत के लिए रब तआला से तौफ़ीक़ भी मांगता रहे। जो लोग अपनी बीवी बच्चों के हक़ में दुआ किया करते हैं ख़ुदा–ए–तआला ने उनकी तारीफ़ फ़रमाई है।

وَالَّذِيْنَ يَقُوْلُوْنَ رَبَّنَا هَبْ لَنَا
مِنْ اَزْوَاجِنَا وَذُرِّيّٰتِنَا قُرَّةَ اَعْيُنٍ (الفرقان-٧٤)

और वह लोग जो अर्ज़ करते हैं ऐ हमारे रब दे हमें बीबीयों और औलाद से आंखों की ठंडक

इसी तरह एक और मक़ाम पर —— अल्लाह तआला नेक बन्दों की सिफ़तें बयान करता है कि वह जिस तरह माँ–बाप के लिए दुआए–ख़ैर करते हैं और उनकी ख़िदमत की तौफ़ीक़ तलब करते हैं यूं ही औलाद की तालीम व तर्बियत पर जो कोशिशें सर्फ़ करते हैं। उनमें कामयाबी की भी दुआ करते हैं। इनकी दुआ यह होती है।

وَاَصْلِحْ لِیْ فِیْ ذُرِّيَّتِیْ اِنِّیْ تُبْتُ اِلَيْكَ
وَاِنِّیْ مِنَ الْمُسْلِمِيْنَ (الاحقاف- ١٥)

और मेरे लिए मेरी औलाद में सलाह रख और मैं तेरी तरफ़ रुजूअ लाया और मैं मुसलमान हूं।

है फ़ज़ाए दहर पर इलहादो लादीनी मुहीत
अज़्मते लौहो क़लम की सौदे बाज़ी आम है
ऐ जवां सिदक़ो सफ़ा अदलो मुरव्वत की क़सम
फिर जहां में ज़ुलफ़ेक़ारे हैदरी का काम है
है तुझी से ज़ेबो ज़ीनत दफ़्तरे तारीख़ की
तू है मिल्लत का लुहू, तुझसे हैं आसारे हयात
ऐसा कोई नअ़रए मस्ताना क्या बाक़ी नहीं?
जिससे तरसां आज तक रावीओ जमना व फ़रात
तेरी शमअ़े फ़िक्र से रौशन हों सीनों के चराग़
हो तेरे दम से उजाला अंजुमन दर अंजुमन
नस्ले ख़ुफ़ता जाग उठे वह फूंक सूरे ज़िन्दगी
नअ़रए तकबीर से फिर गूंज उठें कोहो दमन

मुसन्निफ़ के एक मुस्तक़िल मज़मून की तलख़ीस

इस्लाम में यतीमों की रिआयत

माँ और बाप ही बच्चे की खुशियों और मसर्रतों का मैदान हैं और उनकी शफ़क़तें और प्यार ही नौनिहाल ज़िन्दगियों की रौशनी है। जिस बच्चे को यतीमी का दाग़ लग गया उसके चेहरे पर कुम्हलाहट आ जाती है, उसका हौसलामन्द दिल मुरझा जाता है और इन मुहब्बत व राफ़त की घनेरी छाँव से महरूम होने के बाद बच्चा खुद को शिकस्त–ख़ुर्दा और बेसहारा महसूस करता है। इसी लिए इस्लाम ने यतीम की दिल–दारी, परवरिश, देख–भाल शफ़क़त व प्यार और उसके साथ एहसान पर बहुत ज़ोर दिया है और उन नन्हीं जानों के साथ इन्साफ़, शफ़क़त व मुहब्बत, और हुसने सुलूक को तक़वा की अलामत शुमार किया है—— हुक्मे रब्बानी है। فَاَمَّا الْيَتِيْمَ فَلَا تَقْهَرْ ۝ وَاَمَّا पस यतीम पर दबाव न डालो السَّائِلَ فَلَا تَنْهَرْ ۝ (الضحیٰ ۹،۱۰) और साइल को न झिड़को।

हज़रत क़तादह ने कहा है कि यतीम के साथ मेहरबान बाप की तरह बर्ताव रखना चाहिए (तफ़सीर इब्ने कसीर) अहले अ़रब दौरे जाहिलयत में यतीमों को लावारिस जानकर उन्हें दबाते थे, और उनका माल ख़ुर्द–बुर्द कर डालते थे। इस क़ौल की रौशनी में आयते करीमा गोया उम्मत को यतीमों के मुआ़मलात में नसीहत कर रही है कि हर शख़्स ग़ौर कर ले कि वह अगर इस यतीम की जगह होता तो क़हर व ग़ज़ब और दबाव से उसका दिल किस तरह टूट जाता, यह सोच कर यतीमों पर ज़ुल्म की कोई राह न खोलो—— रब्बे कायनात इरशाद फ़रमाता है ——

وَاَنْ تَقُوْمُوْا لِلْيَتٰمٰى بِالْقِسْطِ وَمَا تَفْعَلُوْا مِنْ خَيْرٍ فَاِنَّ اللّٰهَ كَانَ بِهٖ عَلِيْمًا ۝

और यह कि यतीमों के हक़े इंसाफ़ पर क़ाइम रहो और तुम जो भलाई करो तो अल्लाह को उसकी ख़बर है।

दौरे जाहिलियत में अहले अ़रब औरतों और बच्चों को विरासत में कोई हिस्सा नहीं देते थे, जब आयते मीरास नाज़िल हुई तो लोगों ने कहा या रसूलल्लाह! क्या औरतें और बच्चे अब वारिस होंगे? तो रसूले अकरम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ने उन्हें यह आयते करीमा शुरू से

तिलावत फरमा कर जवाब दिया।

उम्मुलमोमिनीन हज़रत आइशा सिद्दीका रज़ियल्लाहु तआला अन्हा ने फरमाया कि यतीमों के वलियों (ज़िम्मेदार) का यह दस्तूर था कि अगर यतीम लड़की साहिबे माल व जमाल होती तो उससे थोड़े महर पर निकाह कर लेते और अगर वह हसीन व मालदार न होती तो उसे यूं ही छोड़ देते और अगर हुसने सूरत न होता और दौलतमन्द होती तो इस ख़ौफ़ से किसी से निकाह न कराते कि उसका माल उसके हाथ से चला जाएगा। रब तआला ने यह और इसी तरह की तमाम नाइंसाफ़ियों को बन्द करने के लिए आयते बाला नाज़िल फ़रमाई और यतीमों के साथ भरपूर इंसाफ़ और अ़दल (न्याय) का सुलूक अपनाने का हुक्म दिया।

क़ुरआन मजीद में एहसान का हुक्म जहां माँ–बाप और रिश्तेदारों के साथ है। यतीमों के साथ भी है –इरशादे रब्बानी है।

وَبِالْوَالِدَيْنِ إِحْسَانًا وَذِي الْقُرْبَىٰ وَالْيَتَامَىٰ وَالْمَسَاكِينِ ۝ (البقرة - ٨٣)

और माँ–बाप के साथ भलाई करो और रिश्तेदारों और यतीमों से

सूरह बलंद में असहाबुल–मैमना (जन्नतियों) के आमाल बयान फ़रमाये गये हैं। उनमें यह भी है कि ....

أَوْ إِطْعَامٌ فِي يَوْمٍ ذِي مَسْغَبَةٍ ۝ يَتِيمًا ذَا مَقْرَبَةٍ ۝ أَوْ مِسْكِينًا ذَا مَتْرَبَةٍ ۝ (البلد ١٤،١٥،١٦)

या भूक के दिन खाना देना, रिश्तेदार यतीम को या ख़ाक नशीन मिस्कीन को।

हदीस शरीफ़ में आया है कि यतीमों और मिस्कीनों की मदद करने वाला उसकी तरह है जो जिहाद फ़ी सबीलिल्लाह में तैयारी करता है, बेतकान रात में जागा करता है, और लगातार रोज़े रखता है।

यतीम की क़दरदानी को नेक मोमिनीन की सिफ़त बताया गया है।

وَيُطْعِمُونَ الطَّعَامَ عَلَىٰ حُبِّهِ مِسْكِينًا وَيَتِيمًا وَأَسِيرًا ۝ (الدهر - ٨)

और खाना खिलाते हैं उसकी मुहब्बत पर मिस्कीन और यतीम और असीर (क़ैदी) को।

रसूले अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम का इरशाद है। "मुसलमान के घरों में वह घर सबसे अच्छा है जिसमें किसी यतीम की अच्छी तरह से परवरिश हो रही हो, और वह घर उनमें सबसे बुरा है जिसमें कोई यतीम हो और उसके साथ बुरा सुलूक किया जाता हो"——

(इब्ने माजा, अन अबी हुरैरा)

रसूले रहमत सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने जो ख़ुद दुर्रे यतीम हैं, यतीमों के दुखी दिलों का मरहम मुहैया फ़रमाया है और आलमे इस्लाम में यतीम हो जाने वाले हर बच्चे का वली व वाली ख़ुद को बनाया है। गोया माँ—बाप की मुहब्बत व शफ़क़त से महरूम होने वाला बच्चा रसूले रहमतुल—लिल—आलमीन सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम के ख़ास दामने करम में जगह पा जाता है और निज़ामे मुस्तफ़ा यानी हुकूमते इस्लामिया उसकी कफ़ील और ज़िम्मेदार है ——

सरकार इरशाद फ़रमाते हैं ——

اَنَا اَوْلٰى بِكُلِّ مُؤْمِنٍ مِنْ نَفْسِہٖ فَمَنْ تَرَكَ دَيْنًا اَوْ ضَيْعَةً فَاِلَىَّ وَمَنْ تَرَكَ مَالًا فَلِوَرَثَتِہٖ ۔ (اخرجہ ابوداؤد)

मैं हर मोमिन की जान से क़रीब हूं तो जिसने क़र्ज़ छोड़ा या अयाल (औलाद) छोड़ा तो उसका ज़िम्मा मुझपर है और जिसने माल छोड़ा तो वह उसके वोरसा के लिए है।

शरहुस्सुन्ना में इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हुमा से मरवी है —— हु.जूर सय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया

مَنْ اٰوٰى يَتِيْمًا عَلٰى طَعَامِہٖ وَشَرَابِہٖ اَوْجَبَ اللّٰهُ لَهُ الْجَنَّةَ ۔ (شرح السنۃ)

जो शख़्स यतीम को अपने खाने पीने में शरीक करे अल्लाह तआ़ला उसके वास्ते जन्नत वाजिब कर देगा।

सहीह बुख़ारी शरीफ़ में हज़रत सहल बिन सअ़द रज़ियल्लाहु अन्हु से मरवी है ——— रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया ——

اَنَا وَكَافِلُ الْيَتِيْمِ لَهُ اَوْ لِغَيْرِہٖ فِى الْجَنَّةِ هٰكَذَا ۔

मैं और अपने या पराये यतीम की कफ़ालत करने वाला जन्नत में यूं होंगे।

हु.जूर ने यह फ़रमाया और अपनी शहादत की उंगली और बीच वाली उंगली से इशारा करके बताया, और इन दोनों उंगलियों के दर्मियान थोड़ा सा फ़ासला रखा।

यतीम पर शफ़क़त की बरकत

सिर्फ़ रज़ा—ए—हक़ की नीयत से जो ख़ुशनसीब यतीमों के सर पर दस्ते शफ़क़त फेरते हैं, उनको हु.जूर रहमतुललिल आलमीन सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम की बशारत हो ——— आक़ा व मौला इरशाद फ़रमाते हैं ———

जिस शख़्स ने किसी यतीम के सर पर सिर्फ़ अल्लाह के लिए हाथ फेरा, तो सर पर के जितने बालों पर उसका हाथ फिरा, हर–हर बाल के हिसाब से उसकी नेकियां साबित होंगी।

(रवाहो अहमद वत्तिर्मिज़ी अन अबी ओमामा रज़ियल्लाहु अन्हु)

मुस्नदे अहमद ही में है कि सय्यदे दो आलम हुज़ूर मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की ख़िदमत में एक शख़्स हाज़िर हुआ, और उसने अपनी सख़्त दिली, क़सावते क़ल्बी की शिकायत की, और हुज़ूर हकीमे रूहानी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने उसके इस बीमारी का इलाज तजवीज़ किया, और फ़रमाया––

اِمْسَحْ رَأْسَ الْيَتِيْمِ وَاَطْعِمِ الْمِسْكِيْنَ

(رواه احمد عن ابی هريرة)

यतीम के सर पर शफ़क़त से हाथ फेरा करो और मिस्कीन को खाना खिलाया करो।

हुज़ूर की बेअ़सते मुबारका से क़ब्ल यतीमों पर बहुत ज़ुल्म होता था, और उस कमज़ोर तब्क़ए–इंसानी को हिर्स व आज़ के बन्दे अपनी सितम–रानी और ज़ालिमाना माहौल में कुचल रहे थे। दुनिया में यतीमों के वाली, ग़रीबों के दाता, बेकसों के हमदर्द, दुखियों के सहारा बन कर सरकार तशरीफ़ लाये और फ़रमाया ....

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اُحَرِّجُ حَقَّ الضَّعِيْفَيْنِ الْيَتِيْمِ وَالْمَرْأَةِ - (النسائی عن خويلد بن)

ऐ अल्लाह! मैं दो कमज़ोर क़िस्म के लोगों के हक़ को मोहतरम क़रार देता हूं, यतीम के हक़ को और औरत के हक़ को।

यतीम की कफ़ालत

तक़रीरे बाला से यतीमों की कफ़ालत के मसला पर भी रौशनी पड़ती है। इस सिलसिले में जहां कहीं क़वानीने इस्लामी का बोल–बाला है वहां हुकूमते इस्लामिया यतीमों की कफ़ालत और उनकी हाजतें और ज़रूरतें पूरी करने की ज़िम्मेदार है। चुनांचे क़ुरआन मजीद में इस मजबूर तब्क़ा का ज़िक्र भी उन मुस्तहिक़्क़िन में आया है जिन्हें इस्लामी रियासत सरकारी ख़ज़ाने से परवरिश करेगी। इस्लामी रियासत कुफ़्फ़ार से जिहाद करके जो माले–ग़नीमत हासिल करती थी दौरे नबवी में उनके मसारिफ़ यह थे––

وَاعْلَمُوْا اَنَّمَا غَنِمْتُمْ مِّنْ شَیْءٍ فَاَنَّ لِلّٰهِ

और जान लो कि जो कुछ ग़नीमत लो तो उसका पांचवां हिस्सा ख़ास

خُمُسَهٗ وَلِلرَّسُوْلِ وَلِذِی الْقُرْبٰى وَالْيَتٰمٰى وَ
الْمَسٰكِيْنِ وَابْنِ السَّبِيْلِ ۔ (انفال - ۴۱)

अल्लाह व रसूल और क़राबत वालों और यतीमों और मोहताजों और मुसाफ़िरों का है।

एक और मक़ाम पर .क़ुरआन मजीद का फ़रमान है––

مَآ اَفَآءَ اللّٰهُ عَلٰى رَسُوْلِهٖ مِنْ اَهْلِ الْقُرٰى
فَلِلّٰهِ وَلِلرَّسُوْلِ وَلِذِی الْقُرْبٰى وَالْيَتٰمٰى
وَالْمَسٰكِيْنِ وَابْنِ السَّبِيْلِ كَیْ لَا يَكُوْنَ دُوْلَةً
بَيْنَ الْاَغْنِيَآءِ مِنْكُمْ ۔ (الحشر - ۷)

जो ग़नीमत दिलाई अल्लाह ने अपने रसूल को शहर वालों से वह अल्लाह और रसूल की है, और रिश्तेदारों और यतीमों और मिस्कीनों और मुसाफ़िरों के लिए है कि तुम्हारे अग़निया का माल न हो जाये।

यह तो वहां का मुआमला है जहां इस्लामी क़वानीन पूरी तरह लागू हैं। किसी शख़्से वाहिद पर यतीमों का बोझ नहीं, मगर जहां इस्लामी हुकूमत नहीं है और लोग फ़ैज़ाने इस्लाम से पूरी तरह मालामल नहीं हो पा रहे हैं। वहां के लिए क्या हुक्म है ——?

फ़ुक़हा–ए–इस्लाम बयान फ़रमाते हैं कि यतीमों की कफ़ालत फ़र्ज़े किफ़ाया है, अहले क़राबत पर, अगर किसी ने यह ज़िम्मा लिया तो सबसे साक़ित हो जाएगा, वरना सारे रिश्तेदारों की पकड़ होगी और अगर यतीम के रिश्तेदारों में से कोई उसकी कफ़ालत के क़ाबिल नहीं है तो आम मुसलमानों पर यह ज़िम्मेदारी लागू होती है कि उसकी ज़रूरतों की देख–भाल करें, और मिल–जुल कर उसकी हाजतें पूरी करें।

यतीम की तालीम व तर्बियत

यतीम की तालीम व तर्बियत भी कफ़ालत का एक बहुत अहम हिस्सा है। अक्सर लावारिस बच्चे जिनके सर पर सरपरस्तों का साया नहीं होता अनपढ़ और आज़ाद हो जाते हैं। यतीमों की और सारी ज़रूरतों के साथ–साथ निहायत अहम ज़रूरत इस बात की है कि उनकी सही तालीम व तर्बियत का एहतेमाम किया जाये। दौरे हाज़िर की बहुत सारी ख़राबियों में से एक यह भी है कि नई नस्ल में बेअदबी व सरकशी की वबा आम हो गई है, बहुत सारे खुशहाल ख़ानदान अपने नौनिहालों को इस्लामी तालीम और तर्बियत से खुद दूर होने के बाइस, नेक और सालेह नहीं बना पाते। दौलत की हवस, ऐश व इशरत की तलब को ही आज की दुनिया में ज़िन्दगी का

मक़सद तसव्वुर कर लिया गया है और धीरे-धीरे यह बीमारी मुसलमान क़ौम में भी घर करती जा रही है। आज का मुसलमान यह भूलता जा रहा है कि असली चीज़ ईमान और दीनदारी है। नेकी और सालिहियत के साथ खाई हुई खुश्क रोटी, सरकशी और उदवान के हलवा पराठे से अफ़ज़ल है। ऐसे माहौल में कौन है जो क़ौम के यतीमों और बेवाओं के अख़लाक़ व आदात की निगहदाश्त करे? —— रब तआला का इरशाद है——

وَيَسْئَلُوْنَكَ عَنِ الْيَتٰمٰى قُلْ اِصْلَاحٌ لَّهُمْ خَيْرٌ وَاِنْ تُخَالِطُوْهُمْ فَاِخْوَانُكُمْ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ الْمُفْسِدَ مِنَ الْمُصْلِحِ ط

(البقرہ - ۲۲۰)

और तुमसे यतीमों का मसला पूछते हैं, तुम फ़रमाओ उनका भला करना बेहतर, अगर उनका अपना ख़र्च मिला लो तो वह तुम्हारे भाई हैं, और ख़ुदा ख़ूब जानता है बिगाड़ने वाले को संवारने वाले से।

मुअ़जम तिबरानी में हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि मैंने रसूले अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम से दरियाफ़्त किया ———— किन वजहों से मैं उस यतीम को मार सकता हूं जो मेरी सरपरस्ती में है, आप ने फ़रमाया जिन वजहों से तुम अपनी हक़ीक़ी औलाद को मार सकते हो (नीज़ आपने फ़रमाया) ख़बरदार! अपने माल को बचाने की ख़ातिर उसका माल बरबाद न करना, और न उसके माल से अपनी जायदाद बनाना।

(मुअ़जम तिबरानी)

सय्यदी व आक़ाई-मौला-ए-कायनात हज़रत अली मुर्तज़ा कर्रमल्लाहु तआला वजहहु का इरशाद है कि....

तालीम व तर्बियत के लिए बाप का अपनी औलाद को मारना खुश्क ज़मीन पर बरसने वाली बाराने रहमत के मिस्ल है।

यतीम के माल की हिफ़ाज़त

माल व दौलत किसी ग़ैर का हो तो बिला इजाज़त तसर्रुफ़ जाइज़ नहीं, चेजाएकि किसी यतीम व यसीर का माल, उसमें खेयानत या बद मुआमलगी सख़्ततरीन हराम है —— इस बारे में क़ुरआनी अहकाम मुलाहिज़ा कीजिए।

وَلَا تَقْرَبُوْا مَالَ الْيَتِيْمِ اِلَّا بِالَّتِيْ هِيَ اَحْسَنُ

और यतीम के माल के पास न जाओ, मगर बहुत अच्छे तरीक़े से, जब

حَتّٰى يَبْلُغَ اَشُدَّهٗ - (الانعام-١٥٢) तक वह अपनी जवानी को पहुंचे।

अमवाले यतामा से मुतअल्लिक़ क़ुरआनी फ़रमान है----

اِنَّ الَّذِيْنَ يَاْكُلُوْنَ اَمْوَالَ الْيَتٰمٰى ظُلْمًا اِنَّمَا يَاْكُلُوْنَ فِىْ بُطُوْنِهِمْ نَارًا وَسَيَصْلَوْنَ سَعِيْرًا - (النساء - ١٠)

वह जो यतीमों का माल नाहक़ खाते हैं, वह तो अपने पेट में ख़ालिस आग भरते हैं, और कोई दम जाता है कि भड़कते धड़े (दोज़ख़) में जायेंगे।

सहीहैन में हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया --

اِجْتَنِبُوا السَّبْعَ الْمُوْبِقَاتِ "सात हलाक करने वाली चीज़ों से बचो, अर्ज़ किया गया या रसूलल्लाह! वह कौन--कौनसी चीज़ें हैं? फ़रमाया, (1) अल्लाह तआ़ला के साथ शरीक करना, (2) सेहर (जादू) करना, (3) मोहतरम जान को बिला वजह क़त्ल करना, (4) सूद खाना (وَاَكْلُ مَالِ الْيَتِيْمِ) और (5) यतीम का माल खाना, (6) कुफ़्फ़ार से जिहाद के वक़्त पुश्त देखाना (भाग जाना), (7) मोमिन, पाक दामन, ग़ाफ़िल औरतों पर ज़िना की तोहमत लगाना,"------

(सहीह बुख़ारी किताबुल वसाया)

ग़ैर इस्लामी माहौल में यतीम के साथ नित नये तरीक़ों से ज़ुल्म किया जाता था। जब किसी का बाप मर जाता तो चचा या बड़े भाई सब दौलत पर क़ब्ज़ा कर लेते और नाबालिग़ों या छोटों को उनका हक़ नहीं देते थे, यह तमाम हरकतें बहुत अज़ीम गुनाह और सख़्त अज़ाब का मूजिब हैं। क़ुरआने केरीम में है कि:--

وَاٰتُوا الْيَتٰمٰى اَمْوَالَهُمْ وَلَا تَتَبَدَّلُوا الْخَبِيْثَ بِالطَّيِّبِ وَلَا تَاْكُلُوْا اَمْوَالَهُمْ اِلٰى اَمْوَالِكُمْ اِنَّهٗ كَانَ حُوْبًا كَبِيْرًا - (النساء - ٢)

और यतीमों को उनके माल दे दो, और सुथरे के बदले गन्दा न लो, और उनके माल अपने मालों में मिला कर न खाओ, बेशक यह बड़ा गुनाह है।

मौला अज़्ज़ व जल्ल हमें यतीमों के हुक़ूक़ की रिआयत और उनके बारे में ख़ुदा--तर्सी की तौफ़ीक़ से नवाज़े ---- आमीन।

وصلى الله تعالى على خير خلقه سيد المرسلين انيس لينا مى والمساكين وعلى آله وعترته وصحبه اجمعين

Composed by:

RAZAVI COMPUTER POINT

423, Matia Mahal, Jama Masjid, Delhi-6, Ph. & Fax. : 3264524